श्री
कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिबजी, अनादि अछरातीत ।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत ।।

❖ सागर ❖

श्री किताब आठों सागर मूल मिलावे के लिखे हैं

सागर पेहेला नूर का

भोम तले की क्यों कहूं, विस्तार बड़ो अतंत ।
नेक नेक निसान दिए हादियों, मैं करूं सोई सिफत ।।१।।

चौसठ थंभ चबूतरा, दरवाजे तखत बरनन ।
रूह मोमिन होए सो देखियो, करके दिल रोसन ।।२।।

मेयराज हुआ महंमद पर, पोहोंच्या हक हजूर ।
सो साहेदी दई महंमदें, सो मोमिन करें मजकूर[१] ।।३।।

सो रूहें अर्स दरगाह[२] की, कही महंमद बारे हजार ।
दे साहेदी गिरो महंमदी, जाको वतन नूर के पार ।।४।।

हुकम से अब केहेत हों, सुनियो मोमिन दिल दे ।
हक सहूरें विचारियो, हकें सोभा दई तुमें ए ।।५।।

हकें अर्स किया दिल मोमिन, सो मता आया हक दिल सें ।
तुमें ऐसी बड़ाई हकें लिखी, हाए हाए मोमिन गल ना गए इन में ।।६।।

१. चर्चा । २. परमधाम ।

नूर सिफत द्वार सनमुख, और नूर द्वार पीछल ।
एक दाएँ बाएँ एक, हुआ बेवरा चारों मिल ।।७।।

सोभित द्वार सनमुख का, नूर थंभ पाच के दोए ।
थंभ नीलवी दो इनों लगते, सोभा लेत अति सोए ।।८।।

इन सामी द्वार पीछल, थंभ दोए नीलवी के ।
दो थंभ जो इनों लगते, नूर पाच के थंभ ए ।।९।।

नूर द्वार थंभ दो मानिक, तिन पासे दो पुखराज ।
ए द्वार तरफ दाहिनी, रह्या नूर इत बिराज ।।१०।।

तरफ बांई द्वार पुखराजी, दो मानिक थंभ तिन पास ।
चार थंभ नूर सरभर, ए अदभुत नूर खूबी खास ।।११।।

नूर चारों पौरी बराबर, जो करत हैं झलकार ।
ए जुबां खूबी तो कहे, जो पाइए काहूं सुमार ।।१२।।

थंभ बारे बारे चारों खांचों, कहूं तिनका बेवरा कर ।
बारे नंग चार धात के, रंग जुदे जोत बराबर ।।१३।।

नेक देखाए रंग अर्स के, कई खूबी रंग अलेखे ।
रूह सहूर करे हक इलमें, हक देखाएँ देखे ।।१४।।

असल पांच नाम रंग के, नीला पीला लाल सेत स्याम ।
एक एक रंग में कई रंग, सो क्यों कहे जांए बिना नाम ।।१५।।

देखो चौसठ थंभ चबूतरा, रंग नंग अनेक अर्स ।
नाम लिए न जांए रंगो के, रंग एक पे और सरस ।।१६।।

मैं तो नाम लेत जवेरों, जानों बोहोत नाम लिए जांए ।
नंग नाम धात कहे बिना, रंग नाम आवे ना जुबांए ।।१७।।

एकै रस के सब रंग, करें जुदे जुदे झलकार ।
रंग नंग धात तो कहिए, जो आवे कहूं सुमार ।।१८।।

पर हिरदे आवनें रूहों के, मैं कई बिध करत बयान ।
ना तो क्यों कहूं रंग नंग धात की, ए तो खिलवत[1] बका सुभान ॥१९॥

अर्स धात ना रंग नंग रेसम, जित नया न पुराना होए ।
जित पैदा कछू नया नहीं, तित क्यों नाम धरे जाएं सोए ॥२०॥

हेंम जवेर या जो कछू, सो सब जिमी पैदास ।
इत नाम पैदास के क्यों कहिए, जित पैदा न नास ॥२१॥

थंभ और चीज न आवे सब्द में, कर मोमिन देखो सहूर ।
अर्स बानी देख विचारिए, तब हिरदे होए जहूर ॥२२॥

नाम निसान इत झूठ है, तो भी तिन पर होत साबूत ।
जोत झूठी देख नासूत की, अधिक है मलकूत ॥२३॥

सो मलकूत पैदा फना पल में, कई करत खावंद जबरूत ।
सो रोसनी[2] निमूना देख के, पीछे देखो अर्स लाहूत ॥२४॥

इन बिध सहूर जो कीजिए, कछू तब आवे रूह लज्जत ।
और भांत निमूना ना बनें, ए तो अर्स अजीम खिलवत ॥२५॥

आगूं नूर-मकान[3] की कंकरी, देखत ना कोट सूर ।
तिन जिमी नंग रोसनी, सो कैसो होसी नूर ॥२६॥

ए नूर मकान कह्या रसूलें, आगूं जाए ना सके क्योंए कर ।
तिन लाहूत में क्यों पोहोंचहीं, जित जले जबराईल पर ॥२७॥

ए देखो तुम रोसनी, हक अर्स इन हाल ।
जित पर जले जबराईल, कोई फरिस्ता न इन मिसाल ॥२८॥

मेयराज हुआ महंमद पर, नेक तिन किया रोसन ।
अब मुतलक जाहेर तो हुआ, जो अर्स में मोमिनों तन ॥२९॥

दिल अर्स भी तो कह्या, हकें जान ए निसबत ।
इन गिरो पर मेयराज तो हुआ, जो दिन ऊग्या हक मारफत ॥३०॥

१. मूल मिलावा । २. प्रकास । ३. अक्षरधाम ।

ए जो अंदर अर्स अजीम के, खिलवत मासूक या आसिक ।
नूरतजल्ला क्यों कहूं, बका वाहेदत हक ॥३१॥

इन भांत निमूना लीजिए, करियो हक सहूर मोमिन ।
तुम ताले आया लदुन्नी, तुम देखो अर्स रोसन ॥३२॥

ए तुम ताले[1] तो आइया, जो तुम असल खिलवत ।
निसदिन सहूर एही चाहिए, हक बैठे तुमें खेलावत ॥३३॥

अब गिन देखो थंभ चौसठ, बीच चारों हिस्सों चार द्वार ।
नाम रंग नंग तो कहिए, जो कित खाली देखूं झलकार ॥३४॥

एक जोत सागर सब हो रह्या, और ऊपर तले सब जोत ।
कई सूर उड़ें आगूं कंकरी, तिन भोम की जोत उद्दोत ॥३५॥

चंद्रवा दुलीचा तकिए, सब जोतै का अंबार[2] ।
जित देखों तित जोत में, नूर क्यों कहूं लेहेरें अपार ॥३६॥

दो दो नंग थंभों के बीच में, बिना नूर न पाइए ठौर ।
दिवाल बंधाई नूर की, क्यों कहूं रंग नंग और ॥३७॥

बीच खाली जित जाएगा, तित लरत थंभों का नूर ।
उत जंग होत नंगन की, तित अधिक नूर जहूर ॥३८॥

नूर नूर सब एक हो गई, एक दूजी को खेंचत ।
दूनी जोत बीच खाली मिनें, रंग क्यों गिने जांए इत ॥३९॥

जिमी जात भी रूह की, रूह जात आसमान ।
जल तेज वाए सब रूह को, रूह जात अर्स सुभान ॥४०॥

पसु पंखी या दरखत, रूह जिनस हैं सब ।
हक अर्स वाहेदत[3] में, दूजा मिले ना कछुए कब ॥४१॥

दूजा तो कछू है नहीं, दूजी है हुकम कुदरत ।
सो पैदा फना देखन की, फना मिले न माहें वाहेदत ॥४२॥

१. भाग्य, नसीब । २. भण्डार । ३. एकत्व ।

जो कछुए चीज अर्स में, सो सब वाहेदत माहें ।
जरा एक बिना वाहेदत, सो तो कछुए नाहें ॥४३॥

ए खिलवत हक नूर की, नूर आला[1] नूर मकान ।
बिछौना सब नूर का, सब नूरै का सामान ॥४४॥

नूर चंद्रवा क्यों कहूं, नूरै की झालर ।
तले तरफें सब नूर की, देखो नूरै की नजर ॥४५॥

रूहें मिलावा नूर में, बीच कठेड़ा नूर भर ।
थंभ तकिए सब नूर के, कछू और ना नूर बिगर ॥४६॥

तखत सोभित बीच नूर का, नूर में जुगल किसोर ।
बैठे हक बड़ी रूह नूर में, नूर सोभा अति जोर ॥४७॥

नूर सरूप रूप नूर के, नूर वस्तर भूखन ।
सोभा सुन्दरता नूर की, सब नूरै नूर रोसन ॥४८॥

गुन अंग इंद्री नूर की, नूरै बान वचन ।
पिंड प्रकृत सब नूर की, नूरै केहेन सुनन ॥४९॥

रूहें बड़ी रूह नूर में, नूर हक के सदा खुसाल ।
हक नूर निसदिन बरसत, नूर अरस-परस नूरजमाल ॥५०॥

नाम ठाम सब नूर के, कहूं जरा ना नूर बिन ।
मोहोल मन्दिर सब नूर के, माहें बाहेर नूर पूरन ॥५१॥

अर्स भोम सब नूर की, नूरै के थंभ दिवाल ।
द्वार बार कमाड़ी नूर के, नूर गोख[2] जाली पड़साल ॥५२॥

मेहेराव झरोखे नूर के, जरे जरा सब नूर ।
अर्स माहें बाहेर सब नूर में, नूर नजीक नूर दूर ॥५३॥

नूर नाम रोसन का, दुनी जानत यों कर ।
सो तो रोसनी जिद अंधेर की, दुनी क्या जाने लदुन्नी[3] बिगर ॥५४॥

१. सबसे बढ़िया । २. झरोखा । ३. तारतम ।

तले भोम चबूतरा, बैठा हक मिलावा इत ।
हक हादी ऊपर बैठ के, गिरो को खेलावत ॥५५॥

अर्स मता अपार है, दिल में न आवे बिना सुमार ।
ताथें ल्याऊं बीच हिसाब के, ज्यों रूहें करें विचार ॥५६॥

अर्स नाहीं सुमार में, सो हक ल्याए माहें दिल मोमिन ।
बेसुमार ल्याए सुमार में, माहें आवने दिल रूहन ॥५७॥

इत फिरते साठ मन्दिर, तिन बीच गलियां चार ।
चारों तरफों देखिए, जानों जोतै का अंबार[1] ॥५८॥

चौकठ ताके घोड़ले, और दिवालों चित्रामन ।
सोभा क्यों कहूं जोत में, भर्‌यो नूर रोसन ॥५९॥

दिवालों चित्रामन, कई जोत उठें तरंग ।
साम सामी ले उठत, करत माहों माहें जंग ॥६०॥

बिरिख बेली कई जवेर की, सकल वनस्पति ।
नकस कटाव केते कहूं, बनी पसु पंखी जात जेती ॥६१॥

देख देख के देखिए, सोभा अति सुन्दर ।
जैसी देखियत दिवालों, तिनसे अधिक अन्दर ॥६२॥

अधिक चित्रामन अन्दर, क्या क्या देखों इत ।
जिनको देखों निरख के, जानों एही अधिक सोभित ॥६३॥

अन्दर कई वस्तां धरी, कई सेज्या चौकी सन्दूक ।
जित सोभा जो लेत है, तित देखिए तिन सलूक[2] ॥६४॥

कई सीसे प्याले डब्बे, कई अन्दर गिरद देखत ।
कई तबके[3] छोटी बड़ियां, कई सीकियां[4] लटकत ॥६५॥

अन्दर की वस्तां क्यों कहूं, और क्यों कहूं चित्रामन ।
जो मन्दिरों अन्दर देखिए, तो दिल होवे रोसन ॥६६॥

१. भण्डार, ढेर । २. तरीका, ढंग, व्यवस्थित । ३. तह, खंड । ४. छींके ।

बार-साखें द्वार ने, सोभें साठों मन्दिरों के ।
सोभें गिरदवाए बराबर, एक एक पें अधिक सोभा ले ॥६७॥

बारीक इन कमाड़ियों, अनेक चित्रामन ।
रंग नंग या तखतें, ए सब जवेर चेतन ॥६८॥

ना चितारे चेतरी, ना घड़ी[1] ना किन समारी ।
ए अर्स जिमी थंभ मोहोलातें, या दिवालें या द्वारी ॥६९॥

किनार दिवालें द्वार ने, लाल दोरी दोए दोए ।
मन्दिर मन्दिर की हद लग, सोभा लेत अति सोए ॥७०॥

दोरी लगती कांगरी, सब ठौरों गिरदवाए ।
चित्रामन तिनके बीच में, जो देखों सो अधिक सोभाए ॥७१॥

साठों तरफों मन्दिर, नई नई जुदी जुगत ।
ए साठों फेर के देखिए, सोभा और पे और अतंत ॥७२॥

क्यों कहूं जुगत अंदर की, क्यों कहूं जुगत बाहेर ।
जित देखों तित लग रहों, जानों नजरों आवे जाहेर ॥७३॥

उपली भोम चढ़न को, सीढ़ियां अति सोभित ।
नई नई तरह नए रंगों, सामी जोतें जोत उठत ॥७४॥

सीढ़ियां अति झलकत, जब सखियां उतर चढ़त ।
प्रतिबिंब सखियों सोभित, पड़घा[2] मीठे स्वर उठत ॥७५॥

स्वर भूखन के बाजत, मीठे अति रसाल ।
इनकी सोभा क्यों कहूं, जाको खावंद नूरजमाल ॥७६॥

सीढ़ियां अति सोभित, माहें मंदिरों सबन ।
कहूं कहूं देहेलान में, जो जित सो तित रोसन ॥७७॥

दो दो थंभ आगूं द्वारने, तिन आगूं दूसरी हार ।
ए थंभ अति बिराजत, सोभा नाहीं सुमार ॥७८॥

१. घड़ना । २. प्रतिध्वनि ।

चार हांस[1] तले थंभ के, आठ ऊपर तिन ।
सोले बीच आठ तिन पर, और चार ऊपर इन ॥७९॥
इन बिध हांस थंभन की, माहें नकस कई कटाव ।
जुदी जुदी जुगतों चित्रामन, माहें जुदे जुदे कई भाव ॥८०॥
एक एक रंग का जवेर, उसी जवेर में नकस ।
जुदे जुदे कई कटाव, एक दूजे पे सरस ॥८१॥
इनके बीच चबूतरा, इत कठेड़ा गिरदवाए ।
ए खूबी इन चबूतरे, इन जुबां कही न जाए ॥८२॥
तो भी नेक कहूं मैं इन की, जो आए चढ़त है चित्त ।
ए जो बैठक खावंद की, सो नेक कहूं सिफत ॥८३॥
भोम उज्जल कई नकस, कहा कहूं जिमी इन नूर ।
जानों कोटक उदे भए, अर्स के सीतल सूर ॥८४॥
फिरते थंभ जो चौसठ, चारों तरफों द्वार ।
दो दो सीढ़ी आगूं द्वारने, सोभित हैं अति सार ॥८५॥
कई थंभ हैं मानिक के, कई पाच कई पुखराज ।
नूर रोसन एक दूसरे, मिल जोतें जोत बिराज ॥८६॥
कई लसनियां नीलवी, एक थंभ एक रंग ।
यों फिरते थंभ नंगन के, जुदे जुदे सब नंग ॥८७॥
सोले थंभों कठेड़ा, यों थंभ कठेड़ा किनार ।
कठेड़ा थंभों लगता, सोले सोले तरफ चार ॥८८॥
थंभ थंभ को देखत, ज्यों सूर के सामी सूर ।
बढ़त है बीच रोसनी, क्यों कहूं नूर को नूर ॥८९॥
यों थंभ थंभ जोत में, देखो सबन का जहूर ।
ऊपर तले सब जोत में, जम्या नूर भरपूर ॥९०॥

१. पहल ।

ऊपर चंद्रवा थंभों लगता, तले जेता चबूतर ।
जड़ाव ज्यों अति झलकत, एता ही इन पर ॥९१॥

कई रंगों के जवेर, करत जोत अपार ।
कई बेल फूल पात नकस, ए सिफत न आवे सुमार ॥९२॥

बिछौना बिछाइया, करत दुलीचा जोत ।
फल फूल पात नकस, कई उठत तरंग उद्दोत ॥९३॥

चारों तरफों दुलीचा, फिरता बिछाया भर कर ।
चबूतरे लग कठेड़ा, सोभा अति सुन्दर ॥९४॥

क्यों कहूं रंग दुलीचे, फिरती दोरी चार ।
स्याम सेत हरी जरद, ए फिरती जोत किनार ॥९५॥

कई विध के कटाव, कई बिरिख बेल नकस ।
पात फूल बीच फिरते, और पे और सरस ॥९६॥

लग कठेड़े तकिए, क्यों कहूं तकियों रंग ।
बारे हजार दाब बैठियां, एक दूजे के संग ॥९७॥

बैठक दोऊ सिंघासन, चार पाए एक तखत ।
पीछल तकिए दोऊ जुदे, रख्या ऊपर दुलीचे इत ॥९८॥

मोती रतन मानिक, हीरे हेम पाने पुखराज ।
गोमादिक पाच पिरोजा परवाल, रहे कई रंग नंग धात बिराज ॥९९॥

नंग नाम केते कहूं, कहूं केती अर्स धात ।
बरनन तखत अर्स का, कहे जुबां सुपन नंग जात ॥१००॥

चार थंभ चार खूंट के, छत्री सोभा अति जोर ।
जो कदी नैनों देखिए, तो झूठे तन बंध देवे तोर ॥१०१॥

पीछल तकिए दोऊ तरफों, बीच चढ़ती कांगरी चार ।
फूल पात बेल कटाव कई, जुबां कहा कहे नकस अपार ॥१०२॥

दोऊ छेड़ों में थंभ दोए, बीच तीसरा सरभर ।
तिन गुल पर गुल कटाव, नूर रोसन सोभा सुन्दर ॥१०३॥

जो बरनन करूं पूरे पात को, तो चल जाए काहू उमर ।
तो पात न होवे बरनन, ए अर्स तखत यों कर ॥१०४॥

एक पात कई बेल कांगरी, बेल फूल पात कटाव ।
तिन बेलों पात कई बेलें, ऐसे बारीक अति जड़ाव ॥१०५॥

एक नंग बारीक इत देखिए, ताकी जोत न माए आसमान ।
अपार जरे अर्स की, ना आवे माहें जुबान ॥१०६॥

दोऊ तरफों सिंघासन के, बगलों तकिए दोए ।
बारीक तिन कटाव कई, ए बरनन कैसे होए ॥१०७॥

ऊपर छत्रियां क्यों कहूं, कई रंग नंग जोत किनार ।
कई दोरी बेली कांगरी, सोभा फिरती तरफ चार ॥१०८॥

चार थंभ जो पाइयों पर, तिन में बेली अनेक ।
रंग नंग बारीक अलेखे, तिनको क्यों कर होए विवेक ॥१०९॥

चार खूंने के चार नकस, कई कांगरी कटाव फूल ।
बीच पांखड़ी फिरती फूल ज्यों, ए अर्स तखत इन सूल ॥११०॥

फूल कटाव कई बीच में, कई विध के नकस ।
इन के बीच में मानिक, गिरदवाए नीलवी सरस ॥१११॥

दोऊ सरूपों ऊपर, दो फूल ज्यों बिराजत ।
देखी और अनेक चित्रामन, पर अचरज एह जुगत ॥११२॥

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस गिरदवाए ।
ए आठ कलस हैं हेम के, सुन्दर अति सोभाए ॥११३॥

जोर करे जोत जवेर, ऊपर हक तखत ।
ए नूर जिमी आसमान में, रोसन बढ्यो अतंत ॥११४॥

सो ए धरत्या इत तखत, जानों नजर ना छोडूं खिन ।
पल न चाहे बीच आवने, ऐसी सोभा तखत बीच इन ॥११५॥

एक गादी दोए चाकले, पीछल वाही जिनस ।
चौखूंने कटाव कई पसमी[१], जो देखों सोई सरस ॥११६॥

किनार बाएं बीच जवेर के, और रोसन बेसुमार ।
ए तखत नूरजमाल का, अर्स सब चीजों अपार ॥११७॥

इन सिंघासन ऊपर, बैठे जुगल किसोर ।
वस्तर भूखन सिनगार, सुन्दर जोत अति जोर ॥११८॥

एक जोत जुगल की, और बीच बैठे सिंघासन ।
बल बल जाऊं मुखारबिंद की, और बलि बलि जाऊं चरन ॥११९॥

कहा कहूं जोत रूहन की, और समूह भूखन वस्तर ।
ए कही जोत पूरन सिंध की, जो अव्वल नूर सागर ॥१२०॥

ए सागर भर पूरन, तेज जोत को गंज ।
कई इन सागर लेहेरें उठें, पूरन नूर को पुंज ॥१२१॥

महामत कहे सिंध दूसरा, सोभा सरूप रूहन ।
ए सुखकारी अति सुन्दर, ए बका वतन बीच तन ॥१२२॥

॥प्रकरण॥१॥चौपाई॥१२२॥

सागर दूसरा रूहों की सोभा

हक बैठे रूहों मिलाए के, खेल देखावन काज ।
बड़ी भई रदबदल[२], रूहें बड़ी रूहसों राज ॥१॥

देखन खेल जुदागीय का, दिल में लिया रूहन ।
हक आप बैठे तखत पर, खेल रूहों को देखावन ॥२॥

देहेसत सबों जुदागीय की, पर खेल देखन की चाह ।
देखें पातसाही हकक़ी, देखें इस्क बड़ा किन का ॥३॥

१. बढ़िया, मुलायम ऊन का आसन । २. प्रेम संवाद ।

एह जोत जो जोत में, बैठियां ज्यों सब मिल ।
क्यों कहूं सोभा इन जुबां, बीच सुन्दर जोत जुगल ।।४।।

सुन्दर साथ भराए के, बैठियां सरूप एक होए ।
यों सबे हिल मिल रहीं, सरूप कहे न जावें दोए ।।५।।

एक सरूप होए बैठियां, माहें वस्तरों कई रंग ।
क्यों ए बरनन होवहीं, रंग रंग में कई तरंग ।।६।।

देखो अंतर आंखें खोल के, तो आवे नजरों विवेक ।
बरनन ना होवे एक को, गलगल सों लगी अनेक ।।७।।

एक सागर कह्यो तेज जोत को, दूजो सोभा सुन्दर ।
कई तरंग उठें इन रंगों के, खोल देखो आँख अंदर ।।८।।

ए मेला बैठा एक होए के, रूहें एक दूजी को लाग ।
आवे ना निकसे इतथें, बीच हाथ न अंगुरी माग[1] ।।९।।

गिरदवाए तखत के, कई बैठियां तले चरन ।
जानों जिन होवें जुदियां, पकड़ रहे हम सरन ।।१०।।

चबूतरे लग कठेड़ा, रहियां चारों तरफों भराए ।
ज्यों मिल बैठियां बीच में, योंही बैठियां गिरदवाए ।।११।।

एक दूजी को अंक भर, लग रहियां अंगों अंग ।
दिल में खेल देखन का, है सबों अंगों उछरंग ।।१२।।

जाने जिन कोई जुदी पड़े, ए डर दिल में ले ।
मिल कर बैठियां एक होए, बड़ी अचरज बैठक ए ।।१३।।

अतंत सोभा लेत हैं, कबूं ना बैठियां यों कर ।
यों बैठियां भर चबूतरे, दूजा सोभा अति सागर ।।१४।।

माहें ऊँची नीची कोई नहीं, सब बैठियां बराबर ।
अंग सकल उमंग में, खेल देखन को चाह कर ।।१५।।

१. रास्ता, जगह ।

सोभा सुन्दरता अति बड़ी, हक बड़ी रूह अरवाहें ।
ए सोभा सागर दूसरा, मुख कह्यो न जाए जुबांए ॥१६॥

अर्स अरवाहों मुख की, जुबां कहा करे बरनन ।
नैन श्रवन मुख नासिका, सोभा सुन्दर अति घन ॥१७॥

गौर रंग लालक लिए, सोभा सुन्दरता अपार ।
जो एक अंग बरनन करूँ, वाको भी न आवे पार ॥१८॥

मुख चौक छबि की क्यों कहूं, सोभा हरवटी[1] दंत अधूर ।
बीच लांक[2] मुसकनी कहां लग, केहे केहे कहूं मुख नूर ॥१९॥

साड़ी चोली चरनी, जड़ाव रंग झलकार ।
कई जवेर केते कहूं, सोभा सागर सुखकार ॥२०॥

रूहें बैठी हिल मिल के, याके जुदे जुदे वस्तर ।
केते रंग कहूं साड़ियों, निपट बैठियां मिल कर ॥२१॥

कई साड़ी रंग सेत की, कई साड़ी रंग नीली ।
कई साड़ी रंग लाल हैं, कई साड़ी रंग पीली ॥२२॥

एक लाल माहें कई रंग, और कई रंग नीली माहें ।
कई रंग पीली कई सेत में, कई रंग क्यों कहूं जुबांए ॥२३॥

मैं नाम लेत रंगों के, कहूं केते लाल माहें एक ।
एक नाम नीला कहूं, माहें नीले रंग अनेक ॥२४॥

इन बिध कई रंग वस्तरों, ए बरन्यो क्यों जाए ।
तिन में भी जुदियां नहीं, सब बैठियां अंग मिलाए ॥२५॥

अनेक रंगों साड़ियां, माहें कई बिरिख बेली पात ।
फल फूल नकस कटाव कई, ताथें बरन्यो न जात ॥२६॥

कई रंग कहूं वस्तरों, के कहूं जवेरों रंग ।
इन बिध रंग अनेक हैं, ताके उठें कई तरंग ॥२७॥

१. ठोड़ी । २. गेहेराई ।

कई किरने उठें कंचन की, कई किरने हीरन ।
पाच पांने[1] मोती मानिक, किरने जाए न कही जवेरन ॥२८॥

सो किरने लगे जाए ऊपर, और द्वार दिवालों थंभन ।
आवें उतथें किरने सामियां, माहों माहें जंग करें रोसन ॥२९॥

और चोली जो चरनियां, सब अंग में रहे समाए ।
बरनन न होए एक अंग को, तामें बैठियां सब लपटाए ॥३०॥

हेम हीरा मोती मानिक, कई रंगों के हार ।
पाच पांने नीलवी लसनिए, कई जवेरों अंबार ॥३१॥

सोभा अतंत है भूखनों, स्वर बाजत हाथ चरन ।
मीठी बानी अति नरमाई, खुसबोए और रोसन ॥३२॥

वस्तर भूखन सब अंगों, क्यों कहूं केते रंग ।
एक एक नंग के अनेक रंग, तिन रंग रंग कई तरंग ॥३३॥

निलवट[2] श्रवन नासिका, सिर कंठ उर कई हार ।
हाथ पांउं चरन भूखन, अति अलेखे सिनगार ॥३४॥

जो होवें अरवा अर्स की, सो लीजो कर सहूर ।
अंग रंग नंग सब जंग में, होए गयो एक जहूर ॥३५॥

महामत कहे बैठियां देख के, हक हँसत हैं हम पर ।
कहें देखो इन बिध खेल में, भेलियां रहें क्यों कर ॥३६॥

॥प्रकरण॥२॥चौपाई॥१५८॥

ढाल दूसरा इसी सागर

लेहेरी सुख सागर की, लेसी रूहें अर्स ।
याके सरूप याको देखसी, जो हैं अरस परस ॥१॥

ए जो सरूप सुपन के, असल नजर बीच इन ।
वह देखें हमको ख्वाब में, वह असल हमारे तन ॥२॥

१. पन्ना, रत्न । २. मस्तक ।

उनों अंतर आंखें तब खुलें, जब हम देखें वह नजर ।
अंदर चुभे जब रूह के, तब इतहीं बैठे बका घर ।।३।।

सुरत उनों की हम में, ए जुदे जुदे हुए जो हम ।
ए जो बातें करें हम सुपन में, सो करावत हक हुकम ।।४।।

इन बिध हक का इलम, हमको जगावत ।
इलम किल्ली[१] हमको दई, तिनसे बका द्वार खोलत ।।५।।

बीच असल तन और सुपने, पट नींदै का था ।
सो नींद उड़ाए सुपना रख्या, ए देखो किया हक का ।।६।।

ना तो नींद उड़े पीछे सुपना, कबलों रेहेवे ए ।
इन विध सुपना ना रहे, पर हुआ हाथ हुकम के ।।७।।

हुकमें खेल देखाइया, जुदे डारे फरामोसी[२] दे ।
खेल में जगाए इलमें, अब हुकम मिलावे ले ।।८।।

बात पोहोंची आए नजीक, अब जो कोई रेहेवे दम ।
उमेदां तुमारी पूरने, राखी खसमें तुम हुकम ।।९।।

जो रूहें अर्स अजीम की, सो मिलियो लेकर प्यार ।
ए बानी देख फजर की, सबे हूजो खबरदार ।।१०।।

अब फरामोसी क्यों रहे, जब खुल्या बका द्वार ।
रूबरू[३] किए हमको, तन असल नूर के पार ।।११।।

बैठी थीं डर जिनके, सब हिल मिल एक होए ।
हुकम हक के कौल[४] पर, उलट तुमको जगावे सोए ।।१२।।

ना तो सुपन के सरूप जो, सो तो खेलै को खैंचत ।
सो हुकमें तुमें सुपना, हक को मिलावत ।।१३।।

यों सीधी उलटीय से, कौन करे बिना इलम ।
इत जगाए उमेदां पूरन कर, खैंचत तरफ खसम ।।१४।।

१. कुन्जी । २. नींद, बेहोसी । ३. समक्ष - सामने । ४. समय - वचन ।

ए होत किया सब हुकम का, ना तो इन विध क्यों होए ।
जाग सुपना मूल तन का, जगाए हुकम मिलावे सोए ।।१५।।

सो सुध आपन को नहीं, जो विध करत मेहेरबान ।
ना तो कई मेहेर आपन पर, करत हैं रेहेमान ।।१६।।

महामत कहे मेहेर की, रूहों आवे एक नजर ।
तो तबहीं रात को मेट के, जाहेर करें फजर ।।१७।।

।।प्रकरण।।३।।चौपाई।।१७५।।

सागर तीसरा एक दिली रूहन की

अब कहूं सागर तीसरा, मूल मेला बिराजत ।
रूह की आंखों देखिए, तो पाइए इनों सिफत ।।१।।

अर्स की अरवाहें जेती, जुदी होए ना सकें एक खिन ।
ए माहें क्यों होएं जुदियां, असल रूहें एक तन ।।२।।

इन सबन की एक अकल, एक दिल एक चित्त ।
एक इस्क इनों का, सनेह कायम हित ।।३।।

इनों दिल सागर तीसरा, एक सागर सबों दिल ।
देखो इनों दिल पैठ के, किन विध बैठियां मिल ।।४।।

हाँस विलास सुख एक है, एक भांत एक चाल ।
तो इन वाहेदत की क्यों कहूं, कौल[१] फैल[२] जो हाल[३] ।।५।।

तो कह्या वाहेदत इनको, अर्स अरवा हक जात ।
ज्यों जोतें जोत उद्दोत है त्यों, सूरत की सूरत सिफात ।।६।।

इन एक दिली रूहन की, ए क्यों कर कही जाए ।
एक रूह कहे गुझ हक का, दूजी अंग न उमंग समाए ।।७।।

वह सुख केहेवे अपना, जो किया है हक से ।
दिल दूजी के यों आवत, ए सब सुख लिया मैं ।।८।।

१. कहनी । २. करनी । ३. रहनी (चलनी) ।

एकै बात के वास्ते, सुख दूजी को उपज्या यों ।
यों सबन की एक दिली, जुदा बरनन होवे क्यों ।।९।।

एक रूह बात करे हक सों, सुख दूजी को होए ।
जब देखिए मुख बोलते, तब सुख पावें दोए ॥१०॥

अरस-परस यों हक सों, आराम लेवें सब कोए ।
अति सुख पावें बड़ी रूह, ए तिनके अंग सब सोए ॥११॥

जो सुख पावत बड़ी रूह, सब तिनके सुख सनकूल ।
ज्यों जल मूल में सींचिए, पोहोंचे पात फल फूल ॥१२॥

त्यों सुख जेता हक का, पोहोंचत है बड़ी रूह को ।
बड़ी रूह का सुख रूहन, आवत है सब मों ॥१३॥

या भूखन या वस्तर, सिनगार के बखत ।
एक पेहेने सुख दूजी को यों, सबों सुख होत अतंत ॥१४॥

या जो बखत आरोगने, या कोई अर्स लज्जत[1] ।
सो एक रूह से दूसरी, सुख देख केहे पावत ॥१५॥

ए सुख बातें अर्स की, अलेखे अखंड ।
क्यों बरनों मैं इन जुबां, बीच बैठ इन इंड ॥१६॥

मैं नेक कही इन बिध की, सो अर्स में बिध बेसुमार ।
इन मुख बानी क्यों कहूं, जाको वार न पार ॥१७॥

तो कह्या रसूल ने, अर्स में वाहेदत ।
सो कह्या इन माएनो, ए रूहें एक दिल एक चित्त ॥१८॥

एक रूह सुख लेत है, सुख पावत बारे हजार ।
तो कही जो चीज अर्स की, सो चीजें चीज अपार ॥१९॥

जो कोई चीज अर्स में, बाग जिमी जानवर ।
ताको सुख बल इस्क का, पार न आवे क्यों ए कर ॥२०॥

१. स्वाद ।

या पसु या बिरिख[1] कोई, अपार तिनों की बात ।
तो रूहों के सुख क्यों कहूं, ए तो हैं हक की जात ॥२१॥

जिन किन को संसे उपजे, खेल देख के यों ।
ए जो रूहें अर्स की, तिनका इस्क न रह्या क्यों ॥२२॥

इस्क रूह दोऊ कायम, और कायम अर्स के माहें ।
क्यों इस्क खोवे आवे क्यों, उत कमी कोई आवत नाहें ॥२३॥

उत कमी क्यों आवहीं, और रूहें आवें क्यों इत ।
और इस्क जाए क्यों इनों का, जिन की एती बड़ी सिफत ॥२४॥

जात हक की कहावहीं, और कहावें माहें वाहेदत ।
जो इलम विचारे हक का, ता को इस्क बढ़त ॥२५॥

ए केहेती हों मैं तिन को, कोई संसे ल्यावे जिन ।
ए अनहोनी हकें करी, वास्ते हाँसी ऊपर रूहन ॥२६॥

ना तो ए कबहूं नहीं, जो हक रूहें देखें सुपन ।
एक जरा अर्स का, उड़ावे चौदे भवन ॥२७॥

ए हकें हिकमत करी, खेल देखाया झूठ रूहन ।
पट दे झूठ देखाइया, नैनों देखें बका वतन ॥२८॥

आड़ा पट दे झूठ देखाइया, पट न आड़े हक ।
सो हक को हक देखत, हुई फरामोसी रंचक ॥२९॥

इन बिध खेल देखाइया, ना तो रूहें झूठ देखें क्यों कर ।
अपने तन हकें जान के, करी हाँसी रूहों ऊपर ॥३०॥

सोभी किया सुख वास्ते, पर अब सुध किनको नाहें ।
खेल देसी सुख बड़े, जब जागें अर्स के माहें ॥३१॥

हादी नूर है हक का, और रूहें हादी अंग नूर ।
इन विध अर्स में वाहेदत, ए सब हक का जहूर ॥३२॥

१. वृक्ष ।

महामत कहे ए तीसरा, ए जो रूहों दिल सागर ।
अब कहूं चौथा सागर, पट खोल देखो अन्तर ॥३३॥

॥प्रकरण॥४॥चौपाई॥२०८॥

सागर चौथा जुगल[1] किसोर का सिनगार
श्री राजजी का सिनगार पेहेला-मंगला चरन

चौदे तबक की दुनी में, किन कह्या न बका हरफ ।
ए हरफ कैसे केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ ॥१॥

आया इलम लदुन्नी, कहे साहेदी एक खुदाए ।
तरफ पाई हक इलमें, मैं बका पोहोंची इन राह ॥२॥

अर्स देख्या रूहअल्ला, हक सूरत किसोर सुन्दर ।
कही वाहेदत की मारफत, जो अर्स के अंदर ॥३॥

नदी ताल बाग जानवर, जो अर्स की हकीकत ।
रूहअल्ला दई साहेदी, हक हादी खास उमत ॥४॥

महंमद पोहोंचे अर्स में, देखी हक सूरत ।
हौज जोए बाग जानवर, कही सब हक मारफत ॥५॥

देखी अमरद[2] जुल्फें[3] हक की, और बोहोत करी मजकूर ।
कही बातें जाहेर बातून, पोहोंच के हक हजूर ॥६॥

ए साहेदी आई इन विध की, कहे खुदा एक महंमद बरहक ।
सो क्यों सुध परे बिना इलम, हक इलमें करी बेसक ॥७॥

महंमद की फुरमान में, कही तीन सूरत ।
बसरी मलकी और हकी, एक अव्वल दो आखिरत ॥८॥

मेरी रूह जो बरनन करत है, करी हादियों मेहेरबानगी ।
ना तो अव्वल से आज लगे, कहूं जाहेर न बका की ॥९॥

१. जोडी (राज-स्यामाजी) । २. किशोर । ३. घुंघराले बाल ।

आतम चाहे बरनन करूं, जुगल किसोर विध दोए ।
ए दोए बरनन कैसे करूं, दोऊ एक कहावत सोए ॥१०॥

बरनन होए इलम से, जो इलम हक का होए ।
एक देखाऊं बातून में, जाहेर बरनवूं दोए ॥११॥

रूह चाहे बका सरूप की, बरनन करूं जिमी इन ।
इलम लदुन्नी खुदाई से, जो कबहूं न सुनिया किन ॥१२॥

जिन जानो ए बरनन, करत आदमी का ।
ए सब थें न्यारा सुभान जो, अर्स अजीम में बका ॥१३॥

मलकूत ऊपर हवा सुन्य, तिन पर नूर अछर ।
नूर पार नूरतजल्ला, ए जो अछरातीत सब पर ॥१४॥

अर्स ठौर हमेसगी, हमेसा हक सूरत ।
सिनगार सबे हमेसगी, ना चल विचल इत ॥१५॥

जित जैसा रूह चाहत, तहाँ तैसा बनत सिनगार ।
नित नए वाहेदत में, सोभा अखंड अपार ॥१६॥

या वस्तर या भूखन, जो दिल रूह चहे ।
सो उन अंगों सोभा लिए, जानों आगूं ही बन रहे ॥१७॥

हाथ न लगे भूखन को, जो दीजे हाथ ऊपर ।
चित्त चाह्या अंगों सब लग रह्या, जुदा होए न अग्या बिगर ॥१८॥

जिन खिन चित्त जो चाहे, सो आगूंही बनि आवे ।
इन विध सिनगार सब समें, नित नए रूप देखावे ॥१९॥

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या नित सुख ।
वाहेदत हमेसा ए सुख, हक सींचल सनमुख ॥२०॥

सब्द न लगे सोभा असलें, पर रूह मेरी सेवा चाहे ।
तो बरनन करूं इनका, जानों रूहों भी दिल समाए ॥२१॥

इन जिमी जरे की रोसनी, मावत नहीं आसमान ।
तो ए बरनन क्यों होवहीं, अर्स साहेब सुभान ॥२२॥

आसिक क्यों बरनन करे, इस्क लिए रेहेमान ।
एक अंग को देखन लगी, सो तित हीं भई गलतान ॥२३॥

सोभा जुगल किसोर की, सुख सागर चौथा ए ।
आवें लेहेरें नेहेरें अति बड़ी, झीलें अरवाहें जो इन के ॥२४॥

खूबी जुगल किसोर की, प्रेम वचन इन रीत ।
आसिक इन मासूक की, भर भर प्याले पीत ॥२५॥

मेरी रूह नैन की पुतली, तिन पुतलियों के नैन ।
तिन नैनों में राखूं मासूक को, ज्यों मेरी रूह पावे सुख चैन ॥२६॥

॥मंगला चरन तमाम॥

सिर पाग बांधी चतुराई सों, हकें पेच हाथ में ले ।
भाव दिल में लेय के, सुख क्यों कहूं विध ए ॥२७॥

केस चुए[1] में भीगल, लिए जुगतें पेच फिराए ।
पेच दिए ता पर बहु बिध, बांधी सारंगी बनाए ॥२८॥

उज्जल हस्त कमल सों, कोमल नरम अतंत ।
बांधी हिरदे विचार के, दोऊ क्यों कर करूं सिफत ॥२९॥

रंग लाल जरी माहें बेल कई, कई फूल पात नकस कटाव ।
कई रंग नंग जवेर झलकें, बलि जाऊं बांधी जिन भाव ॥३०॥

आसिक एही विचार हीं, तब याही में रहे लपटाए ।
अंदर हक पेचन से, क्यों कर निकस्यो जाए ॥३१॥

ऊपर कलंगी लटकत, झलकत है अति जोत ।
याको नूर आसमान में, भराए रह्यो उद्दोत ॥३२॥

१. सुगंधित इत्तर ।

ऊपर सारंगी दुगदुगी, करे जो झलझलाट ।
ए देखे अंतर आंखें खुलें, ए जो हैड़े के कपाट ॥३३॥

इन परन का नूर क्यों कहूं, देख देख रूह अटकत ।
और न्यारी जोत नंगन की, ए जो दुगदुगी[1] लटकत ॥३४॥

ऊपर दुगदुगी जो मानिक, आसमान भर्‌यो ताके तेज ।
आसमान जिमी के बीच में, जोत पोहोंची रेजा रेज ॥३५॥

सुन्दरता इन मुख की, सब्द न पोहोंचे कोए ।
नूर को नूर जो नूर है, किन मुख कहूं रंग सोए ॥३६॥

ए उज्जल रंग अंग अर्स का, माहें गेहेरी लालक ले ।
मुख चौक छबि इनकी, किन विध कहूं मैं ए ॥३७॥

तिलक सोभित रंग कंचन, असल बन्यो सुन्दर ।
चारों तरफों करकरी, सोहे लाल बिंदी अंदर ॥३८॥

लवने केस कानों पर, तिन केसों का जो नूर ।
आसमान जिमी के बीच में, जोत भराए रही जहूर ॥३९॥

नैनन की मैं क्यों कहूं, नूर रंग भरे तारे ।
सेत माहें लालक लिए, सोहें टेढ़े अनियारे ॥४०॥

रूह के नैनों से देखिए, अति मीठे लगें प्यारे ।
कई रंग रस छबि इनमें, निमख न होंए न्यारे ॥४१॥

नासिका की मैं क्यों कहूं, कोई इनका निमूना नाहें ।
जिन देख्या सो जानहीं, वाके चुभ रहे हैड़े माहें ॥४२॥

कानन मोती लटकत, उज्जल जोत प्रकास ।
बीच लाल की लालक, जोत मावत नहीं आकास ॥४३॥

लाल बाला अर्स धात का, करड़े बने चार चार ।
इन मोती और लाल की, रूह देख देख होए करार ॥४४॥

१. लोकिट ।

गौर रंग अति गालों के, माहें गेहेरी लालक लिए ।
दोऊ भ्रकुटी बीच नासिका, ऊपर सुन्दर तिलक दिए ॥४५॥

गौर हरवटी अति सुन्दर, बीच लांक ऊपर अधूर ।
बल बल जाऊं मीठे मुख की, मिल दोऊ करें मजकूर ॥४६॥

कटि कोमल अति पेट पांसली, पीठ गौर सोभे सरस ।
गरदन केस पेच पाग के, छबि क्यों कहूं अंग अर्स ॥४७॥

कोमल अंग कंठ हैड़ा, खभे मछे गौर लाल ।
कोनी कांड़े कोमल देखत, आसिक बदलत हाल ॥४८॥

लीकें सोभित हथेलियां, रंग उज्जल कहूं के गुलाल ।
रूह थें पलक न छूटहीं, अंग कोमल नूरजमाल ॥४९॥

नरम अंगुरियां पतली, पोहोंचे सलूकी जुदे भाए ।
रंग सलूकी पोहोंचे हथेलियां, किन मुख कहूं चित्त ल्याए ॥५०॥

नैन श्रवन मुख नासिका, मुख छबि अति सुन्दर ।
ए देखत हीं आसिक अंगों, चुभ रहत हैड़े अन्दर ॥५१॥

बीड़ी सोभित मुख मोरत, लेत तम्बोल रंग लाल ।
ए बरनन रूह तोलों करे, जोलों लगे न हैड़े भाल ॥५२॥

जानों के जोवन नौतन, अजूं चढ़ता है रंग रस ।
ऐसा कायम हमेसा, इन विध अंग अर्स ॥५३॥

सेत जामा अंग लग रह्या, मिहीं चूड़ी बनी दोऊ बांहें ।
दावन क्यों बरनन करूँ, इन अंग की जुबांए ॥५४॥

बेल नकस दोऊ बगलों, चीन झलकत मोहोरी जड़ाव ।
नकस बेल गिरबान बन्ध, पीछे अतंत बन्यो कटाव ॥५५॥

ए देत देखाई रंग जवेर, नकस कटाव बेली जर ।
लगत नाहीं हाथ को, रंग नंग धागा बराबर ॥५६॥

इजार[1] रंग जो केसरी, झांईं जामें में लेत ।
दावन जड़ाव अति जगमगे, रंग सोभे केसरी पर सेत ॥५७॥

नीले पीले के बीच में, झांईं लेत रंग दोए ।
सो पटुका कमर बन्या, रंग कह्या सुन्दरबाई सोए ॥५८॥

जरी पटुका कटाव कई, कई नकस बेल किनार ।
पाच पांने हीरे पोखरे, कई रंग नंग झलकार ॥५९॥

मनी मानिक लसनियां नीलवी, अतंत उद्दोतकार ।
फूल पात बेल नकस, ए जोत न छेड़ों सुमार ॥६०॥

हेम वस्तर नंग नूर में, नरमाई अतंत ।
जो कोई चीज अर्स की, खुसबोए अति बेहेकत ॥६१॥

एक हार मोती एक नीलवी, और हार हीरों का एक ।
एक हार लाल मानिक का, एक लसनियां विसेक ॥६२॥

इन हारों बीच दुगदुगी, नूर नंग कह्यो न जाए ।
जोत अम्बर लों उठ के, अवकास रह्यो भराए ॥६३॥

इन पांचों हार के फुमक, तिन फुमक पांचों रंग ।
रंग पांचों सोभें जुदे जुदे, जरी सोभित धागे संग ॥६४॥

ए पांच रंग एक कंचन, ताके बने जो बाजूबन्ध ।
इन जुबां सोभा क्यों कहूं, झूलें फुन्दन भली सनन्ध ॥६५॥

दोए पोहोंची दोए जिनस की, मनी मानिक मोती पुखराज ।
हेम हीरा लसनियां नीलवी, दोऊ पोहोंची रही बिराज ॥६६॥

एक पोहोंची एक दुगदुगी, और सात सात दूजी को ।
सो सातों जिनस जुदी जुदी, आवत ना अकल मों ॥६७॥

पाच पांने हीरे पोखरे, मुंदरी अंगुरियों सात ।
नीलवी मोती लसनियां, साज सोभित हेम धात ॥६८॥

१. चुड़ीदार पेजामा ।

एक अंगूठी आठमी, सो सोभा लेत सब पर ।
सो ए एक मानिक की, जुड़ बैठी अंगूठे भर ॥६९॥

इन मुख नख जोत क्यों कहूं, कई कोट सूरज ढंपाए ।
ए सुखकारी तेज सीतल, ए सिफत न कही जाए ॥७०॥

अजब रंग आसमानी का, जुड़ी जामें मिहीं चादर ।
ए भूखन बेल कटाव जामें, सब आवत माहें नजर ॥७१॥

लाल नीले पीले रंग कई, सोभें छेड़ों बीच किनार ।
जामें चादर मिल रही, लेहेरी आवत किरनें अपार ॥७२॥

गेहेरा रंग जो केसरी, लेत दावन झांईं इजार ।
सेत केसर दोऊ रंग के, सोभा होत सुखकार ॥७३॥

नेफे मोहोरी चीन के, बेल बनी मोती नंग ।
लाल नीली पीली चूनियां, सोभित कंचन संग ॥७४॥

कई रंग इजार बंध में, अनेक विध के नंग ।
सारी उमर बरनन करूं, तो होए ना सुपन के अंग ॥७५॥

एक एक नंग नाम लेत हों, रंग रंग में रंग अनेक ।
एकै इजार बंध में, क्यों कहूं रंग नंग विवेक ॥७६॥

याकी रंग सलूकी क्यों कहूं, बका धनी के चरन ।
लांक तली रंग सोभित, ग्रहूं रूह के अन्तस्करन ॥७७॥

देखूं रंग चरन अंगूठे, और सलूकी कहूं क्यों कर ।
नख उतरते छोटे छोटे, सोभा लेत अंगुरियों पर ॥७८॥

पोहोंचे सोभित रंग सुन्दर, टांकन घूंटी काड़े कोमल ।
लांक एड़ी पीड़ी पकड़, बेर बेर जाऊँ बल बल ॥७९॥

ए चरन नख अति सोभित, जानो तेज पुंज भर पूर ।
लेहेरें लगें आकास को, नेहेरें चलत तेज नूर ॥८०॥

अब जो भूखन चरन के, हेम झांझर घूंघर कड़ी ।
अनेक रंग नंग झलकें, जानों के जवेर जड़ी ॥८१॥

जड़ी न घड़ी समारी किने, ए तो कायम सदा असल ।
नई न पुरानी अर्स में, इत होत न चल विचल ॥८२॥

जरी जवेर रंग रेसम, नकस बेल फूल पात ।
ए सिनगार सोभा कही इन जुबां, पर सब्द न इत समात ॥८३॥

अब जो वस्तर भूखन की, क्यों कर होए बरनन ।
इत अकल ना पोहोंचत, और ठौर नहीं बोलन ॥८४॥

ए भूखन अर्स जवेर के, हक सूरत के अंग ।
कहा कहे रूह इन जुबां, रंग रेसम सोब्रन[1] नंग ॥८५॥

आसिक इन चरन की, अर्स मेला रूहन ।
ए खिलवत खाना गैब का, जिन इत किया रोसन ॥८६॥

चरन तली ना छूटत, रंग लाल लिए उज्जल ।
ताए क्यों कहिए आसिक, जो इतथें जाए चल ॥८७॥

पांउं तले पड़ी रहे, याको इतहीं खान पान ।
एही दीदार दोस्ती कायम, जो होए अरवा अर्स सुभान ॥८८॥

इतहीं जगात इत जारत, इत बंदगी परहेजी जान ।
और आसिक न रखे या बिना, इतहीं होवे कुरबान ॥८९॥

खाना दीदार इनका, या सों जीवे लेवे स्वांस ।
दोस्ती इन सरूप की, तिनसे मिटत प्यास ॥९०॥

हक खिलवत जाहेर करी, इत सिजदा हैयात ।
इतहीं इमाम इमामत, इतहीं महंमद सिफात ॥९१॥

कोई खाली न गया इन खिलवतें, कछू लिया हक का भेद ।
सो कहूं जाए ना सके, पड़्या इस्क के कैद ॥९२॥

१. सुवर्ण, सोना ।

आसिक पकड़े जो दावन, तो छूटे नहीं क्योंए कर ।
देखत देखत चीन लगे, तोलों जात निकस उमर ॥९३॥

बोहोत अटकाव है आसिक, कछू सेवा भी किया चाहे ।
ए तो बरनन सिनगार, सेवा उमंग रही भराए ॥९४॥

जो कदी कमर अटकी, तो आसिक न छोड़े ए ।
ए लांक पटुका छोड़ के, जाए न सके उर ले ॥९५॥

जो दिल हक का देखिए, तो पूरा इस्क का पुन्ज[1] ।
क्यों छोड़े आसिक इनको, हक दिल इस्क गन्ज[2] ॥९६॥

मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स हक का घर ।
इस्क प्याले हक फूल के, देत भर भर अपनी नजर ॥९७॥

इस्क सुराही लेय के, आए बैठे दिल पर ।
इस्क प्याले आसिकों, हक देत आप भर भर ॥९८॥

जो कदी आवे मस्ती में, तो एक प्याला देवे गिराए ।
सराब तहूरा[3] ऐसा चढ़े, दिल तबहीं देवे फिराए ॥९९॥

जाए हक सराब पिलावत, आस बांधत है सोए ।
वाको अर्स सराब की, आवत है खुसबोए ॥१००॥

आई जो कदी खुसबोए, ए जो अर्स की सराब ।
इन मद के चढ़ाव से, देवे तबहीं उड़ाए ख्वाब ॥१०१॥

आज लगे ढांप्या रह्या, हकें मोहोर करी तिन पर ।
सो अछूत प्याला फूल का, हकें खोल दिया मेहेर कर ॥१०२॥

एकों पिया एक पीवत हैं, एक प्याले पीवेंगे ।
खोल्या दरवाजा अर्स का, वास्ते अर्स अरवाहों के ॥१०३॥

अंग आसिक उपले देख के, इतहीं रहे ललचाए ।
जो कदी पैठे गंज में, तो क्यों कर निकस्यो जाए ॥१०४॥

१. ढेर । २. भरपूर । ३. नशा ।

हस्त कमल को देखिए, तो अति खूबी कोमल ।
ए छोड़ आगे जाए ना सके, जो कोई आसिक दिल ॥१०५॥

नख अंगुरियां निरखते, मुंदरियां अति झलकत ।
ए रंग रेखा क्यों छूटहीं, आसिक चित्त गलित ॥१०६॥

पोहोंची बांहें बाजू बन्ध, दोऊ निरखत नीके कर ।
एक नंग और फुन्दन, चुभ रहत हैड़े अन्दर ॥१०७॥

हिरदे कमल अति कोमल, देख इन सरूप के अंग ।
जो आसिक कहावे आपको, क्यों छोड़े इनको संग ॥१०८॥

हार कण्ठ गिरवान[1] जो, अति सुन्दर सुखदाए ।
लाल लटकत मोती पर, ए सोभा छोड़ी न जाए ॥१०९॥

मुख सरूप अति सुन्दर, क्यों कहूं सोभा मुख इन ।
एक अंग जो निरखिए, तो तितहीं थके बरनन ॥११०॥

छबि सरूप मुख छोड़ के, देख सकों न लांक अधूर ।
ए लाल की लालक क्यों कहूं, जो अमृत अर्स मधूर ॥१११॥

ए मुख अधुर लांक[2] छोड़ के, क्यों कर दन्त लग जाए ।
देत नाम निमूना इत का, सों इन सरूपें क्यों सोभाए ॥११२॥

सो दन्त अधुर लांक छोड़ के, जाए न सकों लग गाल ।
सो गाल लाल मुख छोड़ के, आगूं नजर न सके चाल ॥११३॥

मुख नासिका देखत आसिक, सुन्दर सोभा अतंत ।
नेत्र बीच निलाट तिलक, आसिक याही सों जीवत ॥११४॥

भृकुटी तिलक सोभा छोड़ के, जाए न सकों लग कान ।
सो कान कोमल अति सुन्दर, सुख पाइए हिरदे आन ॥११५॥

और भी खूबी कानन की, दिल दरदां देवे भान ।
जाको केहे लेऊं पड़ उत्तर, कोई न सुख इन समान ॥११६॥

१. गला, गर्दन । २. गहेराई ।

कहें सुनें बातें करें, ए जो अर्स मेहेरबान ।
सो खिलवत सुख छोड़ के, लग जवाए नहीं नैन बान ॥११७॥

ए नैन बान सुभान के, क्यों छोड़ें रूह मोमिन ।
ए नैन रस छोड़ आगे चले, रूहें नाम धरत हैं तिन ॥११८॥

नैन अनियारे अति तीखे, पल देत तारे चंचल ।
स्याम उज्जल लालक लिए, ए क्यों कहूं सुपन अकल ॥११९॥

नैन रसीले रंग भरे, खैंचत बंके[१] मरोर ।
सो आसिक रूह जाए ना सके, जाए लगें बान ए जोर ॥१२०॥

ए नेत्र रसीले निरखते, उपजत है सुख चैन ।
ए क्यों न्यारे होए नैन रूह के, सामी छोड़ नैन की सैन ॥१२१॥

जो चल जाए सारी उमर, तो क्यों छोड़िए सुख नैनन ।
इन सुख से क्यों अघाइए, आसिक अंतस्करन ॥१२२॥

निलवट[२] सुन्दर सुभान के, सोभा मीठी मुखारबिंद ।
ए छबि कहीं न जाए एक अंग की, ए तो सोभा सागर खावंद ॥१२३॥

हँसत सोभित हरवटी[३], दंत अधुर मुख लाल ।
आसिक से क्यों छूटहीं, सब अंग रंग रसाल ॥१२४॥

अति कोमल अंग किसोर, कायम अंग उनमद[४] ।
ए छबि अंग अर्स के, पोहोंचत नहीं सब्द ॥१२५॥

मुख नासिका नेत्र भौंह, तिलक निलाट और कान ।
हाथ पांउ अंग हैड़ा, सब मुसकत[५] केहेत मुख बान ॥१२६॥

जो आसिक इन मासूक की, सो अटक रहे एकै अंग ।
और अंग लग जाए ना सके, अंग एकै लग जाए रंग ॥१२७॥

देख बीड़ी मुख मोरत, रूह अंग उपजत सुख ।
पीऊं सराब लेऊं मस्ती, ज्यों बल बल जाऊं इन मुख ॥१२८॥

१. टेढ़े, तिरछे । २. निलाट, मस्तक । ३. ठोडी । ४. मस्ती । ५. स्मित, मंद मंद हंसना ।

ए छबि छोड़ के आसिक, क्यों कर आगे जाए ।
मोहि लेत मुख मासूक, सो चित्त रह्यो चुभाए ॥१२९॥

नैनों निलवट निरखते, देखी बनी सारंगी पाग ।
दुगदुगी कलंगी ए जोत, छबि रूह हिरदे रही लाग ॥१३०॥

होए बरनन चतुराई से, आसिक धरे ताको नाम ।
एक अंग छोड़ जाए और लगे, सो नाहीं आसिक को काम ॥१३१॥

आसिक कहिए हक की, जो लग रहे एकै ठौर ।
आसिक ऐसी चाहिए, जो ले न सके अंग और ॥१३२॥

इन आसिक की नजरों, दिल एकै हुआ सागर ।
सो झीले याही सुख में, निकसे नहीं क्योंए कर ॥१३३॥

तो सोभा सारे सरूप की, क्यों कहे जुबां इन ।
लेहेरें नेहेरें पोहोंचे आकास लों, और ठौर न कोई मोमिन ॥१३४॥

आसिक न लेवे दानाई[1], पर ए दानाई हक ।
इस्क आपे पीवहीं, और पिलावें बेसक ॥१३५॥

ए चतुराई हक की, और हकै का इलम ।
ए सुख इन सरूप के, देवें एही खसम ॥१३६॥

इन सरूप को बरनन, सो याही की चतुराए ।
याको आसिक जानिए, जो इतहीं रहे लपटाए ॥१३७॥

ए सुख इन सरूप को, और आसिक एही आराम ।
जोलों इस्क न आवहीं, तोलों इलम एही विश्राम ॥१३८॥

इस्क को सुख और है, और सुख इलम ।
पर न्यारी बात आसिक की, जिन जो देवें खसम ॥१३९॥

ए इलम ए इस्क, दोऊ इन हक को चाहें ।
पर जिनको हक जो देत हैं, सो लेवे सिर चढ़ाए ॥१४०॥

१. चतुराई ।

महामत कहे अपनी रूहन को, तुम जो अरवा अर्स ।
सराब प्याले इस्क के, ल्यो प्याले पर प्याले सरस ॥१४१॥

।।प्रकरण।।५।।चौपाई।।३४९।।

श्री ठकुरानी जी को सिनगार पेहेलो

मंगला चरन

बरनन करूं बड़ी रूह की, रूहें इन अंग का नूर ।
अरवाहें अर्स में वाहेदत, सो सब इन का जहूर ।।१।।

प्रथम लागूं दोऊ चरन को, धनी ए न छोड़ाइयो खिन ।
लांक तली लाल एड़ियां, मेरे जीव के एही जीवन ।।२।।

सिफत नख कहूं के अंगुरियों, के रंग पोहोंचे ऊपर टांकन ।
कहूं कोमलता किन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन ।।३।।

रंग नरमाई सलूकी[१], अर्स अंग चरन ।
बल बल जाऊं देख देख के, मेरे जीव के एही जीवन ।।४।।

इन पांउं तले पड़ी रहूं, धनी नजर खोलो बातन ।
पल न वालूं[२] निरखूं नेत्रे, मेरे जीव के एही जीवन ।।५।।

चारों जोड़े चरन के, और अनवट[३] बिछिया[४] रोसन ।
बानी मीठी नरमाई जोत धरे, मेरे जीव के एही जीवन ।।६।।

प्यारे मेरे प्राण के, मोहे पल छोड़ो जिन ।
मैं पाई मेहेर मेहेबूब की, मेरे जीव के एही जीवन ।।७।।

ए चरन पुतलियां नैन की, सो मैं राखूं बीच तारन ।
पकड़ राखूं पल ढांप के, मेरे जीव के एही जीवन ।।८।।

मेरे मीठे मीठरड़े आतम के, सो चुभ रहे अन्तस्करन ।
रूह लागी मीठी नजरों, मेरे जीव के एही जीवन ।।९।।

१. तौर तरीका । २. बंद करना । ३. चरण के अंगुठे का आभूषण । ४. चरण की अँगुलियों के आभूषण ।

ए चरन कमल अर्स के, इनसे खुसबोए आवे वतन ।
ए तन बका अर्स अजीम, मेरे जीव के एही जीवन ॥१०॥
ए चरन निमख न छोड़िए, राखिए माहें नैनन ।
ए निसबत हक अर्स की, मेरे जीव के एही जीवन ॥११॥
मेहेरें नेहेर ल्याए चरन अन्दर, द्वार नूर पार खोले इन ।
मोहे पोहोंचाई बका मिने, मेरे जीव के एही जीवन ॥१२॥
सोभा सिनगार अंग सुखकारी, मेरी रूह के कण्ठ भूखन ।
सब खूबियां मेरे इन सें, मेरे जीव के एही जीवन ॥१३॥
ए मेहेर अलेखे असल, मेरे ताले अर्स के तन ।
क्यों न होए मोहे बुजरकियां, मेरे जीव के एही जीवन ॥१४॥
चित्त खैंच लिया इन चरनों, मोहे सब विध करी धंन धंन ।
ए सिफत करूं क्यों इन जुबां, मेरे जीव के एही जीवन ॥१५॥
ज्यों जानो त्यों मेहेबूब करो, ए सुख दिया न जाए दूजे किन ।
कहूं तो जो दूजा कोई होवहीं, मेरे जीव के एही जीवन ॥१६॥
क्यों कहूं चरन की बुजरकियां, इत नाहीं ठौर बोलन ।
ए पकड़ सरूप पूरा देत हैं, मेरे जीव के एही जीवन ॥१७॥
करत चरन पूरी मेहेर, तिन सरूप आवत पूरन ।
प्यार पूरा ताए आवत, मेरे जीव के एही जीवन ॥१८॥
ए चरन दिल आवें निसबतें, ए मता अर्स रूहन ।
ए धनी के दिए क्यों छूटहीं, मेरे जीव के एही जीवन ॥१९॥
धनी देवें सहूर सब बिध, तो नैनों निरखूं निसदिन ।
आठों जाम चौंसठ घड़ी, मेरे जीव के एही जीवन ॥२०॥
महामत चाहें इन चरन को, कर मनसा वाचा करमन ।
आए बैठे मेरे सब अंगो, मेरे जीव के एही जीवन ॥२१॥

॥मंगला चरन संपूर्ण॥

ए रूह सरूप नहीं तत्व को, इनको अस्वारी मन ।
खान पान सुख सिनगार, ए होए रूह के चितवन ॥२२॥

जो पेहेनावा अर्स का, अचरज अदभुत जान ।
कहूं दुनियाँ में किन बिध, किन कबहूँ न सुनिया कान ॥२३॥

कण्ठ कान मुख नासिका, ए जो पेहेनत हैं भूखन ।
ए दुनियां ज्यों पेहेनत है, जिन जानो बिध इन ॥२४॥

या वस्तर या भूखन, सकल अंग हाथ पाए ।
सो असल ऐसे ही देखत, जैसा रूह चित्त चाहे ॥२५॥

अंग संग भूखन सदा, दिलके तअल्लुक[1] असल ।
ए सरूप सिनगार दिल चाहे, अर्स में नाहीं नकल ॥२६॥

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, होत हमेसा बने ।
दिल जैसा चाहे खिन में, तैसा आगूंहीं पेहेने ॥२७॥

जाको नामै कायम, अखंड बका अपार ।
सोई भूल जानो अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥२८॥

पेहेले सोभा कही सुभान की, सोई सोभा बड़ी रूह जान ।
नहीं जुदागी इनमें, जुगल किसोर परवान ॥२९॥

हक सूरत को नूर हैं, जिन जानो अंग और ।
इनको नूर रूहें वाहेदत, कोई और न पाइए इन ठौर ॥३०॥

सोभा स्यामाजीय की, निपट अति सुन्दर ।
अन्तर पट खोल देखिए, दोऊ आवत एक नजर ॥३१॥

लाल साड़ी कटाव कई, कई छापे बेली नकस ।
क्यों कहूं छेड़े किनार की, सोभित अति सरस ॥३२॥

१. संबंध ।

माहें जरी जवेर रंग कई, जानों आगूंहीं बने असल ।
जित जुगत जो चाहिए, सोभित अपनी मिसल ॥३३॥

बेली किनार छेड़े बनी, सुन्दर अति सोभित ।
कटाव फूल नकस कई, जुदी जुदी जड़ाव जुगत ॥३४॥

ऐसे ही असल के, ना कछू बुने वस्तर ।
ऐसे ही भूखन बने, किन घड़े न घाट घड़तर ॥३५॥

चोली स्याम जड़ाव नंग, माहें हेम जवेर अनेक ।
जड़तर कंठ उर बांहें, कहां लग कहूं विवेक ॥३६॥

जित बेली बनी चाहिए, और कांगरी फूल ।
कई नकस खजूरे बूटियां, चोली सोभित है इन सूल[1] ॥३७॥

नंग हेम मिले तो कहूं, जो किन जड़े होए जड़तर ।
नकस कटाव बेली तो कहूं , जो किन बनाए होंए हाथों कर ॥३८॥

चरनी नीली अतलस[2], माहें अनेक बिध के रंग ।
चीन पर बेली नकस, बीच जरी बेल फूल नंग ॥३९॥

क्यों कहूं किनार की कांगरी, मानिक मोती सात नंग ।
हीरे लसनिए पांने पोखरे, माहें पाच कुन्दन करें जंग ॥४०॥

वस्तर धागा न सूझहीं, सरभर जरी नकस ।
वस्तर भर्‌यो न बुन्यो किने, असल सबे एक रस ॥४१॥

नवरंग इन नाड़ी मिने, कंचन धात उज्जल ।
ए केहेती हों सब अर्स के, ए देखो दिल निरमल ॥४२॥

क्या वस्तर क्या भूखन, चीज सबे सुखकार ।
खुसबोए रोसन नरमाई, इन बिध अर्स सिनगार ॥४३॥

सिर पर सोहे राखड़ी[3], जोत साड़ी में करे अपार ।
फिरते मोती माहें मानिक, पांने पोखरे दोऊ किनार ॥४४॥

१. विध (इस तरह) । २. शुद्ध रेशमी वस्त्र । ३. मस्तक के ऊपर बांधने का आभूषण ।

ऊपर राखड़ी जो मानिक, क्यों देऊं इनकी मिसाल ।
आसमान जिमी के बीच में, होए गयो सब लाल ॥४५॥

कुन्दन माहें धरे अति जोत, आकास न माए झलकार ।
बेन[1] गूंथी तीन गोफने, जड़ित घूंघरी घमकार ॥४६॥

तीन रंग जरी फुन्दन, गोफनड़े नंग जड़तर ।
बारीक नंग नीले नकस, ए बरनन होए क्यों कर ॥४७॥

पांन सोहे सेंथे पर, माहें बेल कांगरी कटाव ।
हारें खजूरें बूटियां, मानों के जुगत जड़ाव ॥४८॥

सिर पटली मोती सरें, माहें पांच नंग के रंग ।
मोती सर सेंथे लग, नीले पीले लाल सेत नंग ॥४९॥

तिन नंगों के फूल बने, आगूं सिर पटली कांगरी ।
निलवट से ले राखड़ी, बीच लाल मांग भरी ॥५०॥

अदभुत सोभा ए बनी, कहूं जो होवे और काहें ।
ए देखे ही बनत है, केहेनी में आवत नाहें ॥५१॥

बेनी गूंथी एक भांत सों, पीठ गौर ऊपर लेहेकत ।
देत देखाई साड़ी मिने, फिरती घूंघरड़ी घमकत ॥५२॥

चोली के बंध चारों बंधे, सोभित पीठ ऊपर ।
झलकत फुन्दन चोली कांगरी, सोभा देखत साड़ी अंदर ॥५३॥

ए छबि पीठ की क्यों कहूं, रंग गौर लांक सलूक ।
ए सोभा केहेत सखत जीवरा, हुआ नहीं टूक टूक ॥५४॥

मुख चौक छबि निलवट बनी, क्यों कर कहूं सिफत ।
ए सोभा अर्स सरूप की, क्यों होए इन जुबां इत ॥५५॥

पाच हीरे मोती मानिक, बेना[2] चौक टीका सोभित ।
सेंथें लाल तले मोती सरे, नूर रोसन तेज अतंत ॥५६॥

१. चोटी । २. माथे पर बिन्दी के बीच में पेहेरने का एक आभूषण ।

जड़ित पानड़ी[1] श्रवनों, लरें लाल मोती लटकत ।
ए जरी जोत कही न जावहीं, पांच नंग झलकत ॥५७॥

काजल रेखा तो कहूं, जो होए सुपन के नैन ।
ए स्याम सेत लाल असल, सदा सुखकारी सुख चैन ॥५८॥

ए तन नैन अर्स के, नहीं और कोई देह ।
ए निरखो नैनों रूह के, भीगल प्रेम सनेह ॥५९॥

नैन तीखे अति अनियारे, सखी ए छबि कही न जाए ।
आधे घूंघट मासूक को, निरखत नैन तिरछाए ॥६०॥

सब अंग उमंग करत हैं, करने बात रेहेमान ।
दिल मासूक का देख के, खैंचत हैं प्रेम बान ॥६१॥

कहा कहूं नूर तारन का, सेत लालक लिए ।
काजल रेखा अनियों पर, अंग असल ही दिए ॥६२॥

तिन तारन में जो पुतलियां, माहें नूर रंग रस ।
पिउ देखें प्यारी नैनों, साम सामी अरस-परस ॥६३॥

चकलाई चंचलाई की, छबि होए नहीं बरनन ।
जो धनी देवें पट खोल के, तो तबहीं उड़े एह तन ॥६४॥

बंके भौं भृकुटी लिए, सोभित गौर अंग ।
अंग अंग भूखन भूखन, करत माहों माहें जंग ॥६५॥

दोऊ जड़ाव अदभुत, सात रंग नंग झाल[2] ।
सुच्छम झाल सोभा अति बड़ी, झांईं उठत माहें गाल ॥६६॥

फूल झालों के मुख पर, सोभा लेत अति नंग ।
तिन नंगों जोत उठत है, तिनके अनेक तरंग ॥६७॥

ऊपर किनार साड़ी सोभित, लाल नीली पीली जर ।
छब फब बनी कोई भांत की, सेंथे[3] लवने[4] झाल ऊपर ॥६८॥

१. कानो का आभूषण । २. झाबियां । ३. मांग । ४. कनपटी ।

ए जो कांगरी इन नंग की, सोभित माहें किनार ।
गौर निलवट स्याम केसों पर, जाए अंबर लगी झलकार ॥६९॥

सोभा कहूं अंग माफक, इन सुपन जुबां अकल ।
सो क्यों पोहोंचे इन सरूप लों, जो बीच कायम बका असल ॥७०॥

गौर रंग अति गालों के, ए रंग जानें इनके तन ।
अचरज अदभुत वाही देखें, जो हैं अर्स मोमिन ॥७१॥

मुख चौक नेत्र नासिका, निहायत सोभा अतंत ।
मुरली[1] नासिका तेज में, सोभे नंग मोती लटकत ॥७२॥

एक खसखस के दाने जेता, नंग रोसन अंबर भराए ।
क्यों कहूं नंग मुरलीय के, ए जुबां इत क्यों पोहोंचाए ॥७३॥

हक के अंग का नूर है, ए जो अर्स बका खावंद ।
ए छबि इन सरूप की, क्यों केहेसी मत मंद ॥७४॥

दंत लालक लिए मुख अधुर, क्यों कहूं रंग ए लाल ।
जो कछू होवे पेहेचान, तो क्यों दीजे इन मिसाल ॥७५॥

सुन्दर सरूप स्यामाजीय को, अर्स अखंड सिनगार ।
रूह मुख निरख्यो चाहत, उर पर लटकत हार ॥७६॥

एक हार मोती निरमल, और मानिक जोत धरत ।
तीसरा हार लसनियां, सो सोभा लेत अतंत ॥७७॥

चौथा हार हीरन का, पांचमा सुन्दर नीलवी ।
इन हारों बीच दुगदुगी[2], देखत सोभा अति भली ॥७८॥

क्यों कहूं नंग दुगदुगी, ए पांचों सैन्या चढ़ाए ।
जंग करें माहें जुदे जुदे, पांचों अंबर में न समाए ॥७९॥

पांचों ऊपर हार हेंम का, मुख मोती सिरे नीलवी ।
ए हार अति बिराजत, जड़तर चंपकली ॥८०॥

१. बुलाक, नाक के बीच में लटकता हुआ लम्बा मोती । २. लाकिट ।

पाच पांने पुखराज, जरी मांहें जड़ित ।
चंपकली का हार जो, उर ऊपर लटकत ॥८१॥

ऊपर चोली के कांठले, बेल लगत कांगरी ।
ऊपर चंपकलीय के, मोती मानिक पाने जरी ॥८२॥

पांच लरी चीड़ तिन पर, कंठ लग आई सोए ।
रंग नंग धात अर्स के, इन जुबां सिफत क्यों होए ॥८३॥

सात हार के फुमक, जगमगे सातों रंग ।
मूल बंध बेनी तले, बन रहे ऊपर अंग ॥८४॥

बाजू बंध दोऊ बने, जरी फुमक लटकत ।
हीरे लसनिएं नीलवी, देख देख रूह अटकत ॥८५॥

नवरंग रतन नंग चूड़ के, अर्स धात न सोभा सुमार ।
चूड़ जोत जो करत है, आकास न माए झलकार ॥८६॥

नवरंग रतन चूड़ के, जुदी जुदी चूड़ी झलकत ।
जोत सों जोत लरत है, सोभा अर्स कहूं क्यों इत ॥८७॥

अतंत जोत इन धात में, इन नंग में जोत अतंत ।
अतंत जोत रंग रेसम, तीनों नरमाई एक सिफत ॥८८॥

कंचन जड़ित जो कन्कनी, माहें बाजत झनझनकार ।
बेल फूल नकस जड़े, झलकत चूड़ किनार ॥८९॥

निरमल पोहोंची नवघरी, पांच पांच दोऊ के नंग ।
अर्स रसायन में जड़े, करत मिनो मिने जंग ॥९०॥

हथेली लीकें क्यों कहूं, नरम हाथ उज्जल ।
रंग पोहोंचे का क्यों कहूं, इत जुबां न सके चल ॥९१॥

पांच अंगुरियां पतली, जुदी जुदी पांचों जिनस ।
अर्स अंग की क्यों कहूं, उज्जल लाल रंग रस ॥९२॥

आठ रंग के नंग की, पेहेरी जो मुंदरी ।
एक कंचन एक आरसी, सोभित दसों अंगुरी ॥९३॥

मानिक मोती लसनिएं, पाच पांने पुखराज ।
गोमादिक और नीलवी, आठों अंगुरी रही बिराज ॥९४॥

अंगूठे हीरे की आरसी, दसमी जड़ित अति सार ।
ए जो दरपन माहें देखत, अंबर न माए झलकार ॥९५॥

नख निमूना देऊं हीरों का, सो मैं दिया न जाए ।
एक नख जरे की जोत तले, कई सूरज कोट ढंपाए ॥९६॥

अब कहूं चरन कमल की, जो अर्स रूहों के जीवन ।
बसत हमेसा चरन तले, जो अरवाह अर्स के तन ॥९७॥

चरन तली अति कोमल, रंग लाल लांके दोए ।
मिहीं रेखा माहें कई विध, ए बरनन कैसे होए ॥९८॥

ए जो सलूकी चरन की, निपट सोभा सुन्दर ।
जो कोई अरवा अर्स की, चुभ रेहेत हैड़े अन्दर ॥९९॥

कोई नाहीं इनका निमूना, पोहोंचे अति सोभित ।
टांकन घूंटी काड़े एड़ियां, पांउं तली अति झलकत ॥१००॥

ए छब फब सब देख के, इन चरन तले बसत ।
ए सुख अर्स रूहें जानहीं, जिनकी ए निसबत ॥१०१॥

चारों जोड़े चरन के, झांझर घूंघर कड़ी ।
कांबिए नंग अर्स के, जानों के चारों जोड़े जड़ी ॥१०२॥

नंग नीले पीले झांझरी, और मोती मानिक पांने जरी ।
निरमल नाके कंचन, रंग लाल लिए घूंघरी ॥१०३॥

गांठे वाले रसायन सों, अर्स के पांचों नंग ।
घूंघरी नाकों बीच पीपर[१], फुमक करत जवेरों जंग ॥१०४॥

१. एक आभूषण ।

हीरे लसनिएं हेम में, कड़ी जोत झलकत ।
नीलवी कुन्दन कांबिए, जानों जोत एही अतंत ॥१०५॥

बोलत बानी माधुरी, चलत होत रनकार ।
खुसबोए तेज नरमाई, जोत को नाहीं पार ॥१०६॥

अंगुरिएं अनवट बिछिया, पांने मानिक मोती सार ।
स्वर मीठे बाजत चलते, करत हैं ठमकार ॥१०७॥

नख अंगूठे अंगुरियां, अंबर न माए झलकार ।
ढांपत कोटक सूरज, और सीतलता सुखकार ॥१०८॥

एक नख के तेज सों, ढांपत कई कोट सूर ।
जो कहूं कोटान कोटक, तो न आवे एक नख के नूर ॥१०९॥

कोई भांत तरह जो अर्स की, पेट पांसे उर अंग सब ।
हाथ पांउं कंठ मुख की, किन बिध कहूं ए छब ॥११०॥

कोनी कलाई अंगुरी, पेट पांसे उर खभे ।
हाथ पांउं पीठ मुख छब, हक नूर के अंग सबे ॥१११॥

मैं शोभा बरनों इन जुबां, ले मसाला इत का ।
सो क्यों पोहोंचे इन सांई को, जो बीच अर्स बका ॥११२॥

बीड़ी सोभित मुख में, मोरत लाल तंबोल ।
सोभा इन सूरत की, नहीं पटंतर तौल ॥११३॥

सुच्छम वय[१] उनमद[२] अंगे, सोभा लेत किसोर ।
बका वय कबूं न बदले, प्रेम सनेह भर जोर ॥११४॥

नाम लेत इन सरूप को, सुपन देह उड़ जाए ।
जोलों रूह ना इस्क, तोलों केहेत बनाए ॥११५॥

कोटान कोट बेर इन मुख पर, निरख निरख बलि जाऊँ ।
ए सुख कहूं मैं तिन आगे, अपनी रूह अर्स की पाऊँ ॥११६॥

१. उम्र । २. मस्ती से भरे ।

मुख छबि अति बिराजत, सोभित सब सिनगार ।
देख अंगूठे आरसी, भूखन करत झलकार ॥११७॥

भौं भृकुटी नैन मुख नासिका, हरवटी अधुर गाल कान ।
हाथ पाँउं उर कण्ठ हँसें, सब नाचत मिलन सुभान ॥११८॥

तेज जोत प्रकास में, सोभा सुंदरता अनेक ।
कहा कहूं मुखारबिंद की, नेक नेक से नेक ॥११९॥

श्रवन कण्ठ हाथ पांउं के, भूखन सोभित अपार ।
एक भूखन नकस कई रंग, रूह कहा करे दिल विचार ॥१२०॥

नेक सिनगार कह्या इन जुबां, क्यों बरनवाए सुख ए ।
ए सोभा ना आवे सब्द में, नेक कह्या वास्ते रूहों के ॥१२१॥

मीठी जुबां स्वर बान मुख, बोलत लिए अति प्रेम ।
पिउ सों बातें मुख हंसें, लिए करें मरजादा नेम ॥१२२॥

सामी सैन देत सुख चैन की, उतपन अंग अतंत ।
कोमल हिरदे अति विचार, क्यों कहूं नरमाई सिफत ॥१२३॥

चातुरी गति की क्यों कहूं, सब बोले चाले सुध होत ।
अव्वल इस्क सब खूबियां, हक के अंग की जोत ॥१२४॥

मुख मीठी अति रसना, चुभ रेहेत रूह के माहें ।
सो जानें रूहें अर्स की, न आवे केहेनी में क्याहें ॥१२५॥

क्यों कहूं गति चलन की, जो स्यामाजी पांउं भरत ।
नाहीं निमूना इनका, जो गति स्यामाजी चलत ॥१२६॥

बलि बलि जाऊं चाल गति की, भूखन तेज करे झलकार ।
गिरदवाए मिलावा रूहन का, सब सोभा साज सिनगार ॥१२७॥

सोभा बड़ी सब रूहों की, सब के वस्तर भूखन ।
जोत न माए आकास में, यों घेर चली रोसन ॥१२८॥

अर्स मिलावा ले चली, अपने संग सुभान ।
किया चाह्या सब दिल का, आगूं आए लिए मेहेरबान ॥१२९॥

ए सोभा जुगल किसोर की, चौथा सागर सुख ।
जो हक तोहे हिंमत देवहीं, तो पी प्याले हो सनमुख ॥१३०॥

जुगल के सुख केते कहूं, जो देत खिलवत कर हेत ।
सो सुख इन नेहेरन सों, धनी फेर फेर तोको देत ॥१३१॥

ए बानी सब सुपन में, और सुपने में करी सिफत ।
सो क्यों पोहोंचे सोभा जुगल को, सुपन कौन निसबत ॥१३२॥

सब्द न पोहोंचे सुभान को, तो क्यों रहों चुप कर ।
दिल कान जुबां ले चलत, हक तरफ बांएँ नजर ॥१३३॥

एते दिन ढांपे रहे, किन कही ना हकीकत ।
जो अजूं न बोलत दुनी में, तो जाहेर होए ना हक सूरत ॥१३४॥

ए द्वार दुनी में क्यों खोलिए, ए जो गैब हक खिलवत ।
सो द्वार खोले मैं हुकमें, अर्स बका हक मारफत ॥१३५॥

दुनियां से ढ़ांपे रहे, अर्स बका एते दिन ।
रेहेत अब भी ढांपिया, जो करे ना रूह रोसन ॥१३६॥

ए खोले बड़ा सुख होत है, मेरी रूह और रूहन ।
इनसे हैयाती[1] पावहीं, चौदे तबक त्रैगुन ॥१३७॥

कयामत सरत पोहोंचे बिना, तो ढांपे रहे एते दिन ।
हकें आखिर अपने कौल[2] पर, किए जाहेर आगूं रूहन ॥१३८॥

ए जो कहे मैं सरूप, जुगल किसोर अनूप ।
दई साहेदी महंमद रूहअल्ला, किए जाहेर अर्स सरूप ॥१३९॥

एही लैलत-कदर की फजर[3], ऊग्या बका दिन रोसन ।
हक खिलवत जाहेर करी, अर्स पोहोंचे हादी मोमिन ॥१४०॥

१. अमरत्व, अखंड । २. वचनानुसार । ३. भोर - उषाकाल ।

महामत कहे अपनी रूह को, और अर्स रूहन ।
इन सुख सागर में झीलते, आओ अपने वतन ॥१४१॥

।।प्रकरण।।६।।चौपाई।।४९०।।

चौसठ थंभ चौक खिलवत का बेवरा

इन बिध साथजी जागिए, बताए देऊं रे जीवन ।
स्याम स्यामाजी साथजी, जित बैठे चौक वतन ।।१।।

याद करो सोई साइत, जो हंसने मांग्या खेल ।
सो खेल खुसाली लेय के, उठो कीजे केलि ।।२।।

सुरत एकै राखिए, मूल मिलावे माहें ।
स्याम स्यामाजी साथजी, तले भोम बैठे हैं जाहें ।।३।।

चौसठ थंभ चबूतरा, इत कठेड़ा बिराजत ।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, चौसठ थंभों भर इत ।।४।।

कठेड़ा किनार पर, चबूतरे गिरदवाए ।
सोले थंभों लगता, ए जुगत अति सोभाए ।।५।।

चार द्वार चारों तरफों, और कठेड़ा सब पर ।
चौसठ थंभों के बीच में, गिलम बिछाई भर कर ।।६।।

कहूं चौसठ थंभों का बेवरा, चार धात बारे नंग ।
बने चारों तरफों जुदे जुदे, भए सोले जिनसों रंग ।।७।।

चारों तरफ एक एक रंग के, तैसी तरफों चार ।
नए नए रंग एक दूजे संग, चारों तरफों चौसठ सुमार ।।८।।

ए चार नाम कहे धात के, हेम कंचन चांदी नूर ।
ए चार रंग का बेवरा, लिए खड़े जहूर ।।९।।

और बारे जवेरों का बेवरा, पाच पांने हीरे पुखराज ।
मानिक मोती गोमादिक, रहे पिरोजे बिराज ॥१०॥

नीलवी और लसनियां, और परवाली लाल ।
और रंग कपूरिया, ए रंग बारे इन मिसाल ॥११॥

चार द्वार चार रंग के, आठ थंभ भए जो इन ।
पाच मानिक और नीलवी, द्वार पुखराज चौथा रोसन ॥१२॥

और थंभ दोए पाच के, दोऊ तरफों नीलवी संग ।
द्वार नीलवी संग दोए पाच के, करें साम सामी जंग ॥१३॥

दो थंभ द्वार मानिक के, दोए पुखराज तिन पास ।
दोए थंभ द्वार पुखराज के, ता संग मानिक करे प्रकास ॥१४॥

थंभ बारे भए इन बिध, साम सामी एक एक ।
यों बारे बने साम सामी, तरफ चारों इन विवेक ॥१५॥

हीरा लसनियां गोमादिक, मोती पाने परवाल ।
हेम चांदी थंभ नूर के, थंभ कंचन अति लाल ॥१६॥

पिरोजा और कपूरिया, याके आठ थंभ रंग दोए ।
गिन छोड़े दोए द्वार से, बने हर रंग चार चार सोए ॥१७॥

ए सोले थंभों का बेवरा, थंभ चार चार एक रंग के ।
सो चारों तरफों साम सामी, बने मिसल चौसठ ए ॥१८॥

चारों तरफों चंद्रवा, चौसठ थंभों के बीच ।
जोत करे सब जवेरों, जेता तले दुलीच ॥१९॥

माहें बिरिख बेली कई कटाव, कई फूल पात नकस ।
देख जवेर जुगत कई चंद्रवा, जानों के अति सरस ॥२०॥

इन चौक बिछाई गिलम, ता पर सिंघासन ।
चारों तरफों झलकत, जोत लेहेरी उठत किरन ॥२१॥

झलकत सुन्दर गिलम, अति सोभित सिंघासन ।
यों जोत जमी जवेरन की, बीच जुगल जोत रोसन ॥२२॥

लाल तकिए ऊपर सोभित, धरे बराबर एक दोर ।
नरमों में अति नरम हैं, पसम भरे अति जोर ॥२३॥

जेता एक कठेड़ा, सब में सुन्दर तकिए ।
तिन तकियों साथ भराए के, बैठे एक दिली ले ॥२४॥

जिन बिध बैठियां बीच में, याही बिध गिरदवाए ।
तरफ चारों लग कठेड़े, बीच बैठा साथ भराए ॥२५॥

किरना उठें नई नई, सिंघासन की जोत ।
कई तरंग इन जोत के, नूर नंगों से होत ॥२६॥

पाइए इन तखत के, उत्तम रंग कंचन ।
छे डांडे छे पाइयों पर, अति सुन्दर सिंघासन ॥२७॥

दस रंग डांडों देखत, नए नए सोभित जे ।
हर तरफों रंग जुदे जुदे, दसो दिस देखत ए ॥२८॥

एक तरफ देखत एक रंग, तरफ दूजी दूजा रंग ।
यों दसो दिस रंग देखत, तिन रंग रंग कई तरंग ॥२९॥

तीन डांडे जो पीछले, दो तकिए बीच तिन ।
कई रंग बिरिख बेली बूटियां, ए कैसे होए बरनन ॥३०॥

चारों किनारे चढ़ती, दोरी बेली चढ़ती चार ।
चारों तरफों फूल चढ़ते, करत अति झलकार ॥३१॥

तिन डांडों पर छत्रियां, अति सोभित हैं दोए ।
माहें कई दोरी बेली कांगरी, क्यों कहूं सोभा सोए ॥३२॥

दोए कलस दोए छत्रियों, छे कलस ऊपर डांडन ।
आठों के अवकास में, करत जंग रोसन ॥३३॥

नकस फूल कटाव कई, कई तेज जोत जुगत ।
देख देख के देखिए, नैनां क्योंए न होए तृपित ॥३४॥

चाकले दोऊ पसमी, जोत जवेर नरम अपार ।
बैठे सुन्दर सरूप दोऊ, देख देख जाऊं बलिहार ॥३५॥

जरे जिमी की रोसनीं, भराए रही आसमान ।
क्यों कहूं जोत तखत की, जित बैठे बका सुभान ॥३६॥

बरनन करूं मैं इन जुबां, रंग नंग इतके नाम ।
ए सब्द तित पोहोंचे नहीं, पर कहे बिना भाजे न हाम ॥३७॥

ए जवेर कई भांत के, सोभित भांत रूप कई ।
सो पल पल रूप प्रकासहीं, यों सकल जोत एक मई ॥३८॥

गिलम जोत फूल बेलियां, जोत ऊपर की आवे उतर ।
जोतें जोत सब मिल रहीं, ए रंग जुदे कहूं क्यों कर ॥३९॥

ए मूल मिलावा अपना, नजर दीजे इत ।
पलक न पीछी फेरिए, ज्यों इस्क अंग उपजत ॥४०॥

जो मूल सरूप हैं अपने, जाको कहिए परआतम ।
सो परआतम लेय के, विलसिए संग खसम ॥४१॥

महामत कहे ए मोमिनों, करूं मूल सरूप बरनन ।
मेहेर करी मासूक ने, लीजो रूह के अन्तस्करन ॥४२॥

॥प्रकरण॥७॥चौपाई॥५३२॥

श्री राजजी को सिनगार दूसरो-मंगला चरण

अर्स तुमारा मेरा दिल है, तुम आए करो आराम ।
सेज बिछाई रूच रूच के, एही तुमारा विश्राम ॥१॥

अर्स कह्या दिल मोमिन, अर्स में सब बिसात ।
निमख न्यारी क्यों होए सके, रूह निसबत हक जात ॥२॥

इस्क सुराही ले हाथ में, पिलाओ आठों जाम[1] ।
अपनी अंगना जो अर्स की, ताए दीजे अपनों ताम[2] ॥३॥

१. पहर । २. खुराक ।

इलम दिया आए अपना, भेजी साहेदी अल्ला कलाम ।
रूहें त्रिखावंती[1] हक की, सो चाहें धनी प्रेम काम ।।४।।

फुरमान ल्याया दूसरा, जाको सुकजी नाम ।
दई तारतम ग्वाही ब्रह्मसृष्ट की, जो उतरी अव्वल से धाम ।।५।।

खिलवत खाना अर्स का, बैठे बीच तखत स्यामा स्याम ।
मस्ती दीजे अपनी, ज्यों गलित होऊं याही ठाम ।।६।।

तुम लिख्या फुरमान में, हक अर्स मोमिन कलूब[2] ।
सो सुकन पालो अपना, तुम हो मेरे मेहेबूब ।।७।।

और भी लिख्या समनून को, हक दोस्ती में पातसाह ।
सो कौल पालो अपना, मैं देखूं मेहेबूब की राह ।।८।।

कहूं अबलों जाहेर ना हुई, अर्स बका हक सूरत ।
हिरदे आओ तो कहूं, इत बैठो बीच तखत ।।९।।

ए वजूद न खूबी ख्वाब की, ए कदम हक बका के ।
ढूंढ़्या बुजरकों इप्तदाए[3] से, इत जाहेर न हुए कबूं ए ॥१०॥

उज्जल लाल तली पांउं की, रंग रस भरे कदम ।
छब सलूकी अंग अर्स की, रूह से छूटे क्यों दम ॥११॥

मिहीं लीकें चरनों तली, रूह के हिरदे से छूटत नाहें ।
ए निसबत भई अर्स की, लिखी रूह के ताले[4] माहें ॥१२॥

नख अंगूठे अंगुरियां, सिफत न पोहोंचे सुकन[5] ।
आसमान जिमी के बीच में, रूह याही में देखे रोसन ॥१३॥

एक छोटे नख की रोसनी, ऐसा तिन का नूर ।
आसमान जिमी के बीच में, जिमी जरे जरा भई सब सूर ॥१४॥

देख सलूकी[6] अंगूठों, और अंगुरियों सलूकी ।
उतरती छोटी छोटेरी, जो हिरदे में छबि फबी[7] ॥१५॥

१. प्यासी । २. दिल । ३. शुरुसे । ४. किसमत । ५. वचन । ६. बनावट । ७. चूभ रही ।

लाल नरम उज्जल अंगुरी, फना टांकन घूंटी काड़ों ।
आठों जाम रस बका, पोहोंचे रूह के तालू मों ॥१६॥

लाल लांकें लाल एड़ियां, पांउं तली अति उज्जल ।
ए पांउं बसत जिन हैयड़े, सोई आसिक दिल ॥१७॥

बसत सुखाले[1] नरमाई में, आसमान लग रोसन ।
ए पांउं प्यारे मासूक के, जो कोई आसिक मोमिन ॥१८॥

आसिक बसत अर्स तले, या बसे अर्स के माहें ।
ए खुसबोए मस्ती अर्स की, निसदिन पीवे ताहें ॥१९॥

सुन्दर सलूकी छब सोभित, रंग रस प्यार भरे ।
सोई मोमिन अर्स दिल, जित इन हकें कदम धरे ॥२०॥

ए सुख देत अर्स के, कोई नाहीं निमूना इन ।
ए सुख जानें अरवा अर्स की, निसबत हक सों जिन ॥२१॥

रूहें इस्क मांगें धनी पे, पकड़ धनी के कदम ।
जो छोड़े इन कदम को, सो क्यों कहिए आसिक खसम ॥२२॥

नरम तली लाल उज्जल, आसिक एही जीवन ।
धनी जिन छोड़ाइयो कदम, जाहेर या बातन ॥२३॥

प्यारे कदम राखों छाती मिने, और राखों नैनों पर ।
सिर ऊपर लिए फिरों, बैठो दिल को अर्स कर ॥२४॥

तखत धरया हकें दिल में, राखूं दिल के बीच नैनन ।
तिन नैनों बीच नैना रूह के, राखों तिन नैनों बीच तारन ॥२५॥

तिन तारों बीच जो पुतली, तिन पुतलियों के नैनों माहें ।
राखूं तिन नैनों बीच छिपाए के, कहूं जाने न देऊँ क्याहें ॥२६॥

जाथें चरन जुदे होंए, सो आसिक खोले क्यों नैन ।
ए नैन कायम नूरजमाल के, जासों आसिक पावे सुख चैन ॥२७॥

१. सुखदाई ।

एक अंग छोड़ दूजे अंग को, क्यों आसिक लेने जाए ।
ए कदम छोड़े मासूक के, सो आसिक क्यों केहेलाए ॥२८॥

एक रूह लगी एक अंग को, सो क्यों पकड़े अंग दोए ।
मासूक अंग दोऊ बराबर, क्यों छोड़े पकड़े अंग सोए ॥२९॥

जो कोई अंग हलका लगे, और दूजा भारी होए ।
एक अंग छोड़ दूजा लेवहीं, पर आसिक न हलका कोए ॥३०॥

दूजा अंग आया नहीं, तो लों एक अंग क्यों छूटत ।
यों और अंग ले ना सके, एकै अंग में गलित ॥३१॥

जो आसिक भूखन पकड़े, सो भी छूटे न आसिक सें ।
देख भूखन हक अंग के, आसिक सुख पावे यामें ॥३२॥

हक के अंग के सुख जो, सो जड़ भी छोड़े नाहें ।
तो क्यों छोड़े अरवा अर्स की, हक अंग आया हिरदे माहें ॥३३॥

हेम नंग सब चेतन, अर्स जिमी जड़ ना कोए ।
दिल चाह्या होत सब चीज का, चीज एकै से सब होए ॥३४॥

सब रंग गुन एक चीज में, नरम जोत खुसबोए ।
सब गुन रखे हक वास्ते, सुख लेवें हक का सोए ॥३५॥

आसिक एक अंग अटके, तिनको एह कारन ।
दोऊ अंग मासूक के, किन छोड़े लेवें किन ॥३६॥

नूर बिना अंग कोई ना देख्या, और सब अंगों बरसत नूर ।
अंबर में न समाए सके, इन अंगों का जहूर ॥३७॥

एक अंग मासूक के कई रंग, तिन रंग रंग कई तरंग ।
एक लेहेर पोहोंचावे उमर लग, यों छूटे न आसिक से अंग ॥३८॥

जो कदी मेहेर करें मासूक, तो दूजा अंग देवें दिल आन ।
तो सुख लेवे सब अंग को, जो सब सुख देवे सुभान ॥३९॥

जो कदी आसिक खोले नैन को, पेहेले हाथों पकड़े दोऊ पाए ।
ए नैन अंग नूरजमाल के, सो इन आसिक से क्यों जाए ॥४०॥

॥ मंगला चरण सम्पूर्ण ॥

इजार जो नीली लाहि की, नेफा लाल अतलस ।
नेफे बेल मोहोरी कांगरी, क्यों कहूं नंग जरी अर्स ॥४१॥

काड़ों पर पीड़ी तले, मिहीं चूड़ी सोभित इजार ।
जोत करे माहें दावन, झाईं उठे झलकार ॥४२॥

इजार बंध नंग कई रंग, और कई कांगरी बेल माहें ।
फूल पात कई नकस, सब्द न पोहोंचे ताहें ॥४३॥

कई रंग नंग माहें रेसम, रंग नंग धागा न सूझत ।
हाथ को कछू लगे नहीं, नरम जोत अतंत ॥४४॥

अतंत नाड़ी फुन्दन, जोत को नाहीं पार ।
एही जानों भूल अपनी, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥४५॥

रंग नीला कह्या इजार का, कई रंग नंग इन मों ।
तेज जोत जो झलकत, और कछू लगे ना हाथ कों ॥४६॥

सब अंग पीछे कहूंगी, पेहेले कहूं पाग बांधी जे ।
सिफत न पोहोंचे अंग को, तो भी कह्या चाहे रूह ए ॥४७॥

हाथों पाग बांधी तो कहिए, जो हुकमें न होवे ए ।
कई कोट पाग बनें पल में, जिन समें दिल चाहे जे ॥४८॥

पर हकें बांधी पाग रुच के, नरम हाथों पेच फिराए ।
आसिक देखे बांधते, अतंत रूह सुख पाए ॥४९॥

इन विध सब सिनगार, कहियत इन जुबांए ।
तो कह्या फना का सब्द, बका को पोहोंचत नाहें ॥५०॥

चुप किए भी ना बने, जाको ए ताम[1] दिया खसम ।
ताथें ज्यों त्यों कह्या चाहिए, सो कहावत हक हुकम ॥५१॥

बांधी पाग समार के, हाथ नरम उज्जल लाल ।
इन पाग की सोभा क्यों कहूं, मेरा साहेब नूरजमाल ॥५२॥

लाल पाग बांधी लटकती, कछू ए छबि कही न जाए ।
पेच दिए कई विध के, हिरदे सों चित्त ल्याए ॥५३॥

पाग बनाई कोई भांत की, बीच में कटाव फूल ।
बीच बेली बीच कांगरी, रूह देख देख होए सनकूल ॥५४॥

जो आधा फूल एक पेच में, आवे दूजे पेच का मिल ।
यों बनी बेल फूल पाग की, देख देख जाऊं बल बल ॥५५॥

कई रंग नंग फूल पात में, ए जिनस न आवे जुबांए ।
न आवे मुख केहेनी मिने, जो रूह देखे हिरदे माहें ॥५६॥

पाग बांधी कोई तरह की, जो तरह हक दिल में ल्याए ।
बल बल जाऊं मैं तिन पर, जिन दिल पेच फिराए ॥५७॥

पाग ऊपर जो दुगदुगी, ए जो बनी सब पर ।
जोत हीरा पोहोंचे आकास लों, पीछे पाच रहे क्यों कर ॥५८॥

मानिक तहां मिलत है, पोहोंचत तित पुखराज ।
नीलवी तो तेज आसमानी, उत पांचों रहे बिराज ॥५९॥

कांध पीछे केस नूर झलके, लिए पाग में पेच बनाए ।
गौर पीठ सुध सलूकी, जुबां सके ना सिफत पोहोंचाए ॥६०॥

कण्ठ खभे दोऊ बांहोंड़ी, पेट पांसली बीच हैड़ा ।
रूह मेरी इत अटके, देख छबि रंग रस भर्‌या ॥६१॥

मच्छे दोऊ बाजूअ के, सलूकी अति सोभित ।
रंग छब कोमल दिल की, आसिक हैड़े बसत ॥६२॥

१. खुराक ।

हस्त कमल की क्यों कहूं, पोहोंचे हथेली कई रंग ।
लाल उज्जल रंग केहेत हों, इन रंग में कई तरंग ॥६३॥

कोनी काड़े कलाइयां, रंग नरमाई सलूक ।
ऐसा सखत मेरा जीवरा, और होवे तो होए टूक टूक ॥६४॥

ना तेहेकीक होवे रंग की, ना छबि होए तेहेकीक ।
क्यों कहूं बीसों अंगुरियां, और मिंहीं हथेलियां लीक ॥६५॥

नरम अंगुरियां पतली, लगें मीठी मूठ वालत ।
ए कोमलता क्यों कहूं, जिन छबि अंगुरी खोलत ॥६६॥

क्यों देऊं निमूना नख का, इन अंगों नख का नूर ।
देत न देखाई कछुए, जो होवे कोटक सूर ॥६७॥

अब देखो पेट पांसली, और लांक चलत लेहेकत ।
ए सोभा सलूकी लेऊं रूह में, तो भी उड़े न जीवरा सखत ॥६८॥

देख हरवटी अति सुन्दर, और लाल गाल गौर ।
लांक अधुर बीच हरवटी, क्यों कहूं नूर जहूर ॥६९॥

गाल सोभा अति देत हैं, क्यों कहूं इन मुख छब ।
उज्जल लाल रंग सुन्दर, क्यों कहूं सलूकी फब ॥७०॥

कानन की किन विध कहूं, जो सुने आसिक के बैन ।
सो सुन देवें पड़उत्तर, ज्यों आसिक पावे सुख चैन ॥७१॥

मुख दंत लाल अधुर छब, मधुरी बोलत मुख बान ।
खैंच लेत अरवाह को, ए जो बानी अर्स सुभान ॥७२॥

नैन अनियारे बंकी छब, चंचल चपल रसाल ।
बान बंके मारत खैंच के, छाती छेद निकसत भाल ॥७३॥

लाल तिलक निलवट दिए, अति सुन्दर सुखदाए ।
असल बन्या ऐसा ही, कई नई नई जोत देखाए ॥७४॥

नैन कान मुख नासिका, रंग रस भरे जोवन ।
हाथ पांउं कण्ठ हैयड़ा, सब चढ़ते देखे रोसन ॥७५॥

नख सिख बन्ध बन्ध सब अंग, मानों सब चढ़ते चंचल ।
छब फब सोभा सुन्दर, तेज जोत अंग सब बल ॥७६॥

सुन्दर ललित कोमल, देख देख सब अंग ।
तेज जोत नूर सब चढ़ते, सब देखत रस भरे रंग ॥७७॥

कटि कोमल दिल हैयड़ा, अति उज्जल छाती सुन्दर ।
चढ़ते इस्क अंग अधिक, ऐसा चुभ्या रूह के अन्दर ॥७८॥

इतथें रूह क्यों निकसे, जो इन मासूक की आसिक ।
छोड़ छाती आगे जाए ना सके, मार डारत मुतलक ॥७९॥

जिन बिध की ए इजार, तापर लग बैठा दावन ।
सेत रंग दावन देखिए, आगूं इजार रंग रोसन ॥८०॥

गौर रंग जामा उज्जल, जुड़ बैठा अंग ऊपर ।
अति बिराजत इन विध, ए खूबी कहूं क्यों कर ॥८१॥

ए जुगत जामें की क्यों कहूं, झलकत है चहुं ओर ।
बाहें चोली और दावन, सोभा देत सब ठौर ॥८२॥

पीछे कटाव जो कोतकी, रंग नंग जरी झलकत ।
चीन मोहोरी दोऊ हाथ की, ए सुन्दर जोत अतन्त ॥८३॥

बेल नकस दोऊ बगलों, और बेल गिरवान बन्ध ।
चूड़ी समारी बाहन की, क्यों कहूं सोभा सनन्ध ॥८४॥

छोटी बड़ी न जाड़ी पतली, सबे बनी एक रास ।
उतरती मिहीं मिहीं से, जुबां क्या कहे खूबी खास ॥८५॥

पीला पटुका कमरें, रंग नंग छेड़े किनार ।
बेल पात फूल नकस, होत आकास उद्दोत कार ॥८६॥

लाल नीले सेत स्याम रंग, किनार बेल कटाव ।
सात रंग छेड़ों मिने, क्यों कहूं जुगत जड़ाव ॥८७॥

पाच पाने मोती नीलवी, हीरे पोखरे मानिक नंग ।
बेल कटाव कई नकस, कहूं गरभित केते रंग ॥८८॥

जामें में झांई झलकत, हरे रंग इजार ।
लाल बन्ध और फुन्दन, कई रंग नंग अपार ॥८९॥

कहूं अंगों का बेवरा, जुदे जुदे भूखन ।
ए जो जवेर अर्स के, कहूं पेहेले भूखन चरन ॥९०॥

चारों जोड़े चरन के, नरमाई सुगन्ध सुखकार ।
बानी मधुरी बोलत, सोभा और झलकार ॥९१॥

भूखन मेरे धनी के, किन विध कहूं जो ए ।
के कहूं खूबी नरमाई की, के कहूं अम्बार तेज के ॥९२॥

एक नंग के कई रंग, सोभे झन बाजे झांझर ।
पांच नंग रंग एक के, अति मीठी बोले घूंघर ॥९३॥

नाके वाले जवेर के, माहें नरम जोत गुन दोए ।
तीसरी बानी माधुरी, चौथा गुन खुसबोए ॥९४॥

सोई पांच रंग एक नंग में, तिनकी बनी जो कड़ी ।
देत देखाई रंग नंग जुदे, जानों किन घड़ के जड़ी ॥९५॥

कांबी एक जवेर की, तामें झीने रंग नंग दस ।
दिल चाहे भूखन सब बने, सो हक भूखन ए अर्स ॥९६॥

मैं देखे जवेर अर्स के, ज्यों हेम भूखन होत इत ।
कई रंग नंग मिलाए के, बहु बिध भूखन जड़ित ॥९७॥

किन जड़े घड़े ना समारे, भूखन आवत दिल चाहे ।
अर्स जवेर कंचन ज्यों, जानों असल ऐसे ही बनाए ॥९८॥

दस रंग के जवेर की, माहें कई नकस मुंदरी ।
दोए अंगूठी अंगूठों, आठों जिनस आठ अंगुरी ॥९९॥

ए नरम अंगुरियां अतन्त, नख सोभित तेज अपार ।
ए देखो भूल अकल की, सोभा ल्याइए माहें सुमार ॥१००॥

पोहोंचे और हथेलियां, केहे न सकों सलूकी ए ।
छबि देख रंग हाथन की, बल बल जाऊं इनके ॥१०१॥

कड़ियां दोऊ काड़ो सोहे, सोभा तेज धरत ।
लाल नंग नीले आसमानी, जोत अवकास भरत ॥१०२॥

पोहोंची पांचों नंग की, जुबां केहे न सके जिनस ।
पाच पांने मोती नीलवी, लरें हीरे अति सरस ॥१०३॥

बाजूबंध की क्यों कहूं, जो बिराजे बाजू पर ।
कई मिहीं नकस कटाव, जोत भरी जिमी अम्बर ॥१०४॥

एक नंग एक रंग का, एक रंगे नंग अनेक ।
इन बिध के अर्स भूखन, सो कहां लो कहूं विवेक ॥१०५॥

पांच रंग जरी फुन्दन, सोभा लेत अतंत ।
पांच रंग जवेर झलके, फुन्दन सोहे लटकत ॥१०६॥

नरम जोत खुसबोए, दिल चाही सोभाए ।
कई विध सुख लेवे हक के, सुख भूखन कहे न जाए ॥१०७॥

बीच हार मानिक का, और हीरों हार उज्जल ।
पाच मोती और नीलवी, लसनियां अति निरमल ॥१०८॥

और निरमल मांहें दुगदुगी, तामें नंग करत अति बल ।
बीच हीरा छे गिरदवाए, जोत आकास किया उज्जल ॥१०९॥

गौर गलस्थल धनी के, उज्जल लाल सुरंग ।
झांई उठे इन नूर में, करन फूल के नंग ॥११०॥

निरख नासिका धनी की, लटके मोती पर लाल ।
लेत अमी रस अधुर पर, रस अमृत रंग गुलाल ॥११११॥

करन फूल की क्यों कहूं, उठत किरन कई रंग ।
तिन नंग रंग कई भासत, रंग रंग में कई तरंग ॥११२॥

करत मानिक माहें लालक, हीरे मोती सेत उजास ।
और पाच करत है नीलक, लेत लेहेरी जोत आकास ॥११३॥

तेज भी मानिक तित मिले, पोहोंचत तित पुखराज ।
नीलवी तो तेज आसमानी, रहे रंग नंग पांचों बिराज ॥११४॥

पाँच फूल कलंगी पर, उपरा ऊपर लटकत ।
कोई ऐसी कुदरत नूर की, लेहेरी आकास में झलकत ॥११५॥

एता इन कलंगी मिने, एकै हीरे का नूर ।
आसमान जिमी के बीच में, मानों कोटक ऊगे बका सूर ॥११६॥

जंग जवेर करत हैं, आसमान देखिए जब ।
लरत बीच आकास में, नजरों आवत है तब ॥११७॥

कहे महामत अरवा अर्स से, जो कोई आई होए उतर ।
सो इन सरूप के चरन लेय के, चलिए अपने घर ॥११८॥

॥प्रकरण॥८॥चौपाई॥६५०॥

श्री ठकुरानीजी का सिनगार दूसरा-मंगला चरण

बरनन करूं बड़ी रूह की, जो हक नूर का अंग ।
रूहें नूर इन अंग के, जो हमेसा सब संग ॥१॥

हक जात अंग अर्स का, क्यों कर बरनन होए ।
इन सरूप को सुपन भोम का, सब्द न पोहोंचे कोए ॥२॥

किन देख्या सुन्या न तरफ पाई, तो क्यों दुनियां सुन्या जाए ।
जो अरवा होसी अर्स की, सो सुन के सुख पाए ॥३॥

मेरी रूह चाहे वरनन करूं, होए ना बिना अर्स इलम ।
वस्तर भूखन अर्स के, इत पोहोंचे ना सुपन का दम ।।४।।
पेहेने उतारे इन जिमी, नाहीं अर्स में चल विचल ।
इत नकल कोई है नहीं, अर्स वाहेदत सदा असल ।।५।।
घट बढ़ अर्स में है नहीं, मिटे न कबूं रोसन ।
तिन सरूप को इन मुख, क्यों कर होए बरनन ।।६।।
एक पेहेर दूजा उतारना, तब तो घट बढ़ होए ।
जब जैसा जित चित्त चाहे, तब तित तैसा बनत सोए ।।७।।
अर्स अरवा चाहे दिल में, सो होए माहें पल एक ।
जिन अंग जैसा वस्तर, होए खिन में कई अनेक ।।८।।
सुन्दर सरूप सोभा लिए, सिनगार वस्तर भूखन ।
रस रंग छबि सलूकी, चाहे रूह के अन्तस्करन ।।९।।
वस्तर भूखन अंग अर्स के, सो सबे हैं चेतन ।
सब सुख देवें रूह को, तो क्यों न देवें नैन श्रवन ॥१०॥
नया सिनगार साजत, तब तो नया पेहेन्या कह्या जात ।
नया पुराना अर्स में नहीं, पर पोहोंचे न इतकी बात ॥११॥
जो सिफत बड़ी चित्त लीजिए, बड़ी अकल सो जान ।
फना बका को क्या कहें, ताथें पोहोंचत नहीं जुबान ॥१२॥
तो भी रूह मेरी ना रहे, हक बरनन किया चाहे ।
हक इलम आया मुझ पे, सो या बिन रह्यो न जाए ॥१३॥
ना तो बैठ झूठी जिमी में, ए बका बरनन क्यों होए ।
इलम हुकम खैंचे रूह को, अकल जुबां कहे सोए ॥१४॥
यासों रूह सुख पावत, अर्स रूहें पावें आराम ।
कहूं सिखाई रूहअल्ला की, ले साहेदी अल्ला कलाम ॥१५॥

हक इलम सिर लेय के, वरनन करूँ हक जात ।
रूह मेरी सुख पावहीं, हिरदे बसो दिन रात ॥१६॥

मोमिन दिल अर्स कह्या, सो अर्स बसे जित हक ।
निसबत मेहेर जोस हुकम, और इस्क इलम बेसक ॥१७॥

ए बरकत हक अर्स में, तो दिल अर्स कह्या मोमिन ।
तो बरनन होए अर्स का, जो यों दिल होए रोसन ॥१८॥

बारीक बातें अर्स की, सो जानें अर्स के तन ।
जीवत लेसी सो सुख, जिनका टूट्या अन्तस्करन ॥१९॥

छाती मेरी कोमल, और कोमल तुमारे चरन ।
बासा करो तिन पर, तुम सों निसबत अर्स तन ॥२०॥

मेरी छाती दिल की कोमल, तिन पर राखो नरम कदम ।
इतहीं सेज बिछाए देऊं, जुदे करो जिन दम ॥२१॥

रूह छाती इनसे कोमल, तिनसे पाँउं कोमल ।
इत सुख देऊँ मासूक को, सुख यों लेऊँ नेहेचल ॥२२॥

मेरी रूह नैन की पुतली, बीच राखूं तिन तारन ।
खिन एक न्यारी जिन करो, ए चरन बसें निस दिन ॥२३॥

चरन तली अति कोमल, मेरी रूह के नैन कोमल ।
निस दिन राखों इन पर, जिन आवने देऊं बीच पल[1] ॥२४॥

या रूह नैन की पुतली, तिन नैनों बीच तारन ।
इत रहे सेज्या निस दिन, धरो उज्जल दोऊ चरन ॥२५॥

मेरा दिल तुमारा अर्स है, माहें बहुबिध की मोहोलात ।
कई सेज हिंडोले तखत, रूह नए नए रंगों बिछात ॥२६॥

आसा पूरो सुख देओ, नए नए कराऊं सिनगार ।
द्यो पूरी मस्ती ना बेहोसी, सुख लेऊं सब अंग समार ॥२७॥

१. पलक (बिना पलक झपके) ।

अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात[1] ।
खाना पीना सुख सिनगार, माहें सब न्यामत[2] हक जात ॥२८॥

सब गुझ तुमारे दिल का, जिन मेरा दिल किया रोसन ।
जेता मता बीच अर्स के, सब आया दिल मोमिन ॥२९॥

तो कह्या अर्स दिल मोमिन, हक बैठें उठें खेलाए ।
सुख बका हक अर्स रूहें, सिफत क्यों कहे दिल जुबांए ॥३०॥

पर दिल के जो अंग हैं, धनी अर्स तुमारा सोए ।
तुमें देखें कहे बातें सुने, लेवे तुमारी बानी की खुसबोए ॥३१॥

पिए तुमारी सुराही का, कई स्वाद फूल सराब ।
ऐसी लेऊं मस्ती मेहेबूब की, ज्यों उड़ जावे ख्वाब ॥३२॥

एक स्वाद दिल देखे तुमको, सुने तुमारी बानी की मिठास ।
लेऊं खुसबोए बोलूं तुम सों, और क्यों कहूं दुलहा विलास ॥३३॥

जेता सुख तुमारे अर्स में, सो सब हमारे दिल ।
ए सुख रूह मेरी लेवहीं, जो दिए इन अर्स में मिल ॥३४॥

रूह बरनन करे क्या होए, जोलों स्वाद न ले निसबत ।
इस्क इलम जोस हुकम, ए सब मेहेरें पाइए न्यामत ॥३५॥

दिल के अंगों बिना हक के, इत स्वाद लीजे क्यों कर ।
देखे सुने बोले बिना, तो क्या अर्स नाम धर्‌या धनी बिगर ॥३६॥

जो मासूक सेज न आइया, देख्या सुन्या न कही बात ।
सुख अंग न लियो इन सेज को, ताए निरफल गई जो रात ॥३७॥

अर्स तुमारा मुझ दिल, माहें अर्स की सब बिसात[3] ।
सब न्यामतें इनमें, अर्स बका हक जात ॥३८॥

१. साज सामान । २. खजाना । ३. सकल पदार्थ ।

पेहेले बरनन करूं सिर राखड़ी, पीछे बरनन करूं सब अंग ।
अखंड सिनगार अर्स को, मेरी रूह हमेसा संग ॥३९॥

मंगला चरण सम्पूर्ण

सिर पर बनी जो राखड़ी, कहूं किन बिध सोभा ए ।
आसमान जिमी के बीच में, एकै जोत खड़ी ले ॥४०॥

गिरदवाए मानिक बने, बीच हीरे की जोत ।
किनार ऊपर जो नीलवी, हुई जिमी अंबर उद्दोत ॥४१॥

सेंथे भी सिर कांगरी, और सिर कांगरी पांन ।
इन सिर सोभा क्यों कहूं, अलेखे अमान ॥४२॥

माहें हारें खजूरे बूटियां, बीच फूल करत हैं जोत ।
जुदे जुदे रंगों जवेर, ठौर ठौर रोसनी होत ॥४३॥

लाल सेंथे जोत जवेर की, दोए पटली समारी सिर ।
बनी नंगन की कांगरी, बल बल जाऊं फेर फेर ॥४४॥

निलवट[१] पर सर[२] मोतिन की, ऊपर नीलवी बीच मानिक ।
दोऊ तरफों तीनों सरें, तीनों बराबर माफक ॥४५॥

इन तीनों पर कांगरी, बनी सेंथे बराबर ।
पांन कटाव सेंथे पर, ए जुगत कहूं क्यों कर ॥४६॥

मानिक मोती नीलवी, हेम हीरा पुखराज ।
इन मुख सोभा क्यों कहूं, सिर खूबी रही बिराज ॥४७॥

बीच फूल कटाव कई, राखड़ी के गिरदवाए ।
ए जुगत बनी मूल लग, गूंथी नंग मोती बेनी[३] बनाए ॥४८॥

तीन नंग रंग गोफने, तिन एक एक में तीन रंग ।
हीरा मानिक नीलवी, सोभित कंचन संग ॥४९॥

१. मस्तक । २. माला (लरी) । ३. चोटी ।

तीनों गोफने घूंघरी, बेनी गूंथी नई जुगत ।
बल बल जाऊं देख देख के, रूह होए नहीं तृपित ॥५०॥

चारों बंध बेंनी तले, नीले पीले सोभित ।
सोभे नरम बंध चोलीय के, खूबी साड़ी तले देखत ॥५१॥

बेनी सोभित गौर पीठ पर, चोली और बंध चोली के ।
सब देत देखाई साड़ी मिने, सब सोभा लेत सनंध ए ॥५२॥

लाल साड़ी कई नकस, माहें अनेक रंग के नंग ।
मिहीं नकस न होवे गिनती, करें जवेर माहें जंग ॥५३॥

सिर पर साड़ी सोभित, नीली पीली सेत किनार ।
तिन पर सोहे कांगरी, करें पांच नंग झलकार ॥५४॥

साड़ी कोर किनार पर, नंग कांगरी सोभित ।
फूल बेल कई खजूरे, कई छेड़ों मिने झलकत ॥५५॥

कई छापे बूटी नकस, नंग साड़ी बीच अपार ।
कई नंग रंग झलके बीच में, सोभा न आवे माहें सुमार ॥५६॥

मुख उज्जल गौर लालक लिए, छबि जाए न कही जुबांए ।
देख देख सुख पावत, रूह हिरदे के माहें ॥५७॥

मुख चौक नेत्र नासिका, ए छबि अंग अर्स के ।
असलें सिफत न पोहोंचहीं, बुध माफक कही ए ॥५८॥

मुखारबिन्द स्यामाजीय को, रूह देख देख सुख पाए ।
निलवट सोहे चांदलो, रूह बलिहारी ताए ॥५९॥

रंग नीले जोत पाच में, रूह इतथें क्यों निकसाए ।
जो जोत देखूं मानिक, तो वाही में डूब जाए ॥६०॥

करे आकास मोती उज्जल, जोत लटके लेवे तरंग ।
आसिक रूह क्यों निकसे, क्योंए न छूटे लग्यो दिल रंग ॥६१॥

श्रवनों सोहे पानड़ी, मानिक के रंग सोए ।
और रंग माहें नीलवी, जोत करत रंग दोए ॥६२॥

मोती पांने पुखराज, लरें लटकत इन ।
तरंग उठत आकास में, किरना करत रोसन ॥६३॥

मुरली[1] सोभित मुख नासिका, लटके मोती नंग लाल ।
निरख देखूं माहें नीलवी, तो तबहीं बदले हाल ॥६४॥

न्यारी गति नैनन की, अति अनियारे लोचन[2] ।
उज्जल माहें लालक लिए, अतंत तेज तारन ॥६५॥

भौं भृकुटी[3] अति सोभित, रंग स्याम अंग गौर ।
केहेनी जुबां न आवत, कछू अर्स रूहें जानें जहूर ॥६६॥

सोभा लेत हैं टेढ़ाई, नैना रंग रस भरे ।
ए सोई रूहें जानहीं, जाकी छाती छेद परे ॥६७॥

मीठे नैन रसीले निरखत, माहें सरम[4] देत देखाए ।
प्यार पूरा देखत, मेहेर भरे सुखदाए ॥६८॥

अनेक गुन इन नैन में, गिनती न होवे ताए ।
सुख देत अलेखे सब अंगों, नैना गुन क्यों ए ना गिनाए ॥६९॥

सनकूल मुख अति सुंदर, गौर हरवटी सलूक ।
लांक अधुर दंत देखत, जीव होत नहीं टूक टूक ॥७०॥

मुख चौक अति सुन्दर, अति सुन्दर दोऊ गाल ।
कही न जाए छबि सलूकी, निपट उज्जल माहें लाल ॥७१॥

सात रंग माहें झलकत, लेहेरें लेत दोऊ झाल ।
दोऊ फूल सोभित मुख झालके, जुबां क्या कहे इन मिसाल ॥७२॥

फिरते मोती सोभित, माहें मानिक पाच कुंदन ।
हीरे लसनिए नीलवी, सातों अम्बर करे रोसन ॥७३॥

१. बुलाक । २. नैन । ३. भौह । ४. लाज ।

हेम नंग नाम लेत हों, जानों के पेहेने बनाए ।
ए बिध अर्स में है नहीं, जुबां सके न सिफत पोहोंचाए ॥७४॥

कई रंग करे एक खिन में, नई नई जुगत देखाए ।
सोहे हमेसा सब अंगों, पेहेने सोभित चित्त चाहे ॥७५॥

चीज सबे अर्स चेतन, वस्तर या भूखन ।
सुख लेत हक के अंग का, यों करत अति रोसन ॥७६॥

हर नंग में सब रंग हैं, हर नंग में सब गुन ।
सो नंग ले कछू न बनावत, सब दिल चाह्या होत रोसन ॥७७॥

वस्तर भूखन केते कहूं, हेम रेसम रंग नंग ।
ना पेहेन्या ना उतारिया, ए दिल चाह्या सोभित अंग ॥७८॥

यों दिल चाह्या वस्तर, और दिल चाह्या भूखन ।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, आगूं रोसन होए माहें खिन ॥७९॥

सुन्दर सरूप छबि देख के, फेर फेर जाऊं बल बल ।
जो रूह होवे अर्स की, सो याही में जाए रल गल ॥८०॥

नरम लांक अति बारीक, पेट पांसली अति गौर ।
ए छबि रूह रंग तो कहे, जो होवे अर्स सहूर ॥८१॥

बल बल जाऊं मुख सलूकी, बल बल जाऊं रंग छब ।
बल बल जाऊं तेज जोत की, बल बल जाऊं अंग सब ॥८२॥

स्याम चोली अंग गौर पर, सोभा लेत अतंत ।
सोहे बेली कटाव, जुबां कहा कहे सिफत ॥८३॥

मोहोरी पेट और खड़पे, चोली नकस कटाव ।
बाजू खभे उर ऊपर, मानो के फूल जड़ाव ॥८४॥

पांच हार अति सुन्दर, हीरे मानिक मोती लसन ।
नीलवी हार आसमान लों, जंग पांचों करें रोसन ॥८५॥

इन नंगों जोत तब पाइए, जब नजर दीजे आसमान ।
सब जोत जंग करत हैं, कोई सके न काहू भान ॥८६॥

जो नंग पेहेले देखिए, पीछे देखिए आकास ।
तब याही की जोत बिना, और पाइए नहीं प्रकास ॥८७॥

बीच हारों के दुगदुगी, पाच पांने हीरे नंग ।
माहें लसनिए नीलवी, करें पांचों आपुस में जंग ॥८८॥

पांचों हारों के ऊपर, दोरा देखत जड़ाव ।
कई बेल फूल पात नकस, कह्यो न जाए कटाव ॥८९॥

मोती मानिक पांने लसनिएं, पाच हेम पुखराज ।
और भूखन कई सोभित, रह्या सब पर डोरा बिराज ॥९०॥

कांठले ऊपर चोलीय के, बेल धरत अति जोत ।
और भी मानिक मोती नीलवी, डोरा तिन पर करे उद्दोत ॥९१॥

चार सरें इत चीड़की, हर सर में रंग दस ।
सो रंग इन जुबां न आवहीं, रंग रूह चाहिल अर्स ॥९२॥

कण्ठ-सरी इन ऊपर, रही कण्ठ को मिल ।
न आवे निमूना इनका, जाने आसिक रूह का दिल ॥९३॥

नाम नंगों का लेत हों, केहेत हों जड़ाव जुबांए ।
सब्दातीत तो कहावत, जो सिफत इत पोहोंचत नाहें ॥९४॥

दोऊ बाजू बन्ध बिराजत, तामें केहेत जड़ाव ।
माहें रंग नंग कई आवत, ए जड़ाव कह्या इन भाव ॥९५॥

जो सोभा बाजू-बन्ध में, हिस्सा कोटमा कह्या न जाए ।
मैं कहूं इन दिल माफक, वह पेहेनत हैं चित्त चाहे ॥९६॥

स्याम सेत लाल नीलवी, बाजू-बंध और फुमक ।
तिन फुन्दन जरी झलकत, लेत लेहेरी जोत लटकत ॥९७॥

मोहोरी तले जो कंकनी, स्वर मीठे झन बाजत ।
नंग कटाव ए कांगरी, चूड़ पर जोत अतन्त ॥९८॥

चूड़ कोनी काड़े लग, चूड़ी चूड़ी हर नंग ।
नंग नंग कई रंग उठें, तिन रंग रंग में कई तरंग ॥९९॥

इन विध के रंग इन जुबां, क्यों कर आवे सुमार ।
न आवे सुमार रंग को, ना कछू जोत को पार ॥१००॥

चूड़ आगूं डोरे दो सोभित, और कंकनी सोभे ऊपर ।
दोऊ तरफों तेज जोत के, कंकनी बोलत मीठे स्वर ॥१०१॥

डोरे कंचन नंग के, तिन आगूं नवघरी ।
नव रंग नवघरी मिने, रही आकास जोत भरी ॥१०२॥

पोहोंचे हथेली हाथ के, अतन्त रंग उज्जल ।
बलि जाऊं छबि लीकों पर, निपट अति कोमल ॥१०३॥

दोऊ हाथ की अंगुरी, पतलियां कोमल ।
चरन न छूटे आसिक से, इतथें न निकसे दिल ॥१०४॥

पांच पांच अंगुरी जुदी जुदी, अति कोमल छबि अंगुरी ।
दोऊ अंगूठों आरसी, और आठों रंग आठ मुन्दरी ॥१०५॥

पाच पांने[1] कंचन के, नीलवी और हीरे ।
लसनिएं और गोमादिक, रंग पीत पोखरे ॥१०६॥

दरपन रंग दोऊ अंगूठी, और नंगों के दरपन ।
कर सिनगार तामें देखत, नख सिख[2] लग होत रोसन ॥१०७॥

आगूं इन नख जोत के, होवें सूर कई कोट ।
सो सूर न आवे नजरों, एक नख अनी की ओट ॥१०८॥

ए झूठ निमूना इत का, हक को दिया न जाए ।
चुप किए भी ना बने, केहे केहे रूह पछताए ॥१०९॥

१. पन्ना । २. मस्तक ।

नीली अतलस चरनियां, कई बेल कटाव नकस ।
चीन किनारे जो देखों, जानों एक पे और सरस ॥११०॥

माहें बेल फूल कई खजूरे, नंगै के वस्तर ।
नरम सखत जो दिल चाहे, जोत सुगंध सब पर ॥१११॥

नव रंग इन नाड़ी मिने, ताना बाना सब नंग ।
जानों बने जवेरन के, नकस रेसम या रंग ॥११२॥

अचरज अदभुत देखत, वस्तर या भूखन ।
नरम खूबी खुसबोए, भर्‌या आसमान में रोसन ॥११३॥

अर्स में नकल है नहीं, ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन ।
जब जिन अंग जो चाहिए, तिन सौ बेर होए मिने खिन ॥११४॥

जैसा सुख दिल चाहे, वस्तर भूखन तैसे देत ।
सब गुन अर्स चीज में, सब सुख इस्क समेत ॥११५॥

ए चरन अंग अर्स के, सब्द न पोहोंचे इत ।
लाल उज्जल रंग सलूकी, मुख कही न जाए सिफत ॥११६॥

मैं कहूं सिफत सलूकी, पर केहे न सकों क्योंए कर ।
पूरा एक अंग केहे ना सकों, जो निकस जाए उमर ॥११७॥

जो कदी कहूं नरमाई की, और लीकों सिफत ।
आए जाए आरबल[१], सब्द न इत पोहोंचत ॥११८॥

जो कहूं खूबी रंग की, जोत कहूं लाल उज्जल ।
ए क्यों आवे सब्द में, जो कदम बका नेहेचल ॥११९॥

रंग उज्जल नरमाई क्यों कहूं, और चरन की खुसबोए ।
ए जुबां अर्स चरन की, क्यों कर बरनन होए ॥१२०॥

फना टाकन घूटियां, और काड़े अति कोमल ।
रंग सोभा सलूकी छोड़के, आगूं आसिक न सके चल ॥१२१॥

१. उम्र ।

अब कहूं भूखन चरन के, कांबी कड़ली घूंघरी ।
झलके नंग जुदे जुदे, इन पर झन बाजे झांझरी ॥१२२॥

एक हीरे की झांझरी, दिल रूचती रंग अनेक ।
नकस कटाव बूटी ले, ए किन विध कहूं विवेक ॥१२३॥

पांच नंग की घूंघरी, दिल रूचती बोलत ।
दिल चाहे रंग देखावत, दिल चाही सोभित ॥१२४॥

कई रंग कड़ी में देखत, जानों के हेम नंग जड़ित ।
सो सोभित सब दिल चाहे, नित नए रूप धरत ॥१२५॥

कई बेल कड़ी में पात फूल, सब नंग नकस कटाव ।
मानो हेम मिलाए के, कियो सो मिहीं जड़ाव ॥१२६॥

या विध कांबी सनंध, या नंग या धात ।
जैसा दिल में आवत, तैसा तित सोभात ॥१२७॥

घड़े जड़े ना किन किए, दिल चाह्या सब होत ।
दिल चाह्या मीठा बोलत, दिल चाही धरे जोत ॥१२८॥

कहूं अनवट पाच के, माहें करत आंभलिया[1] तेज ।
निरखत नखसिख सिनगार, झलकत रेजा रेज ॥१२९॥

और अंगुरियों बिछिए, करे स्वर रसाल ।
हीरे और लसनिएं, मानिक रंग अति लाल ॥१३०॥

माहें और रंग हैं कई, कई नकस करें चित्र ।
सोभा पर बलि जाइए, देख देख एह विचित्र ॥१३१॥

जो सलूकी फनन की, और अंगुरी फनों तली ।
ए बका बरनन कबूं न हुई, गई अव्वल से दुनी चली ॥१३२॥

सलूकी नखन की, और छबि अंगुरियों ।
खूबी सिफत चरन की, कही न जाए जुबां सों ॥१३३॥

१. दर्पण ।

जोत धरत आकास रोसनी, क्यों कर कहूं नख जोत ।
मानों सूरज अर्स के, कोटक हुए उद्दोत ॥१३४॥

दोऊ अंगूठे चरन के, और खूबी अंगुरियों ।
सोभा सुन्दर फनन की, आवत ना सिफत मों ॥१३५॥

मिहीं लीकां[1] देखूं लांक में, इतहीं करूं विश्राम ।
बल बल जाऊं देख देख के, एही रूह मोमिनों ताम[2] ॥१३६॥

चरन तली लांक एड़ियां, उज्जल रंग अति लाल ।
केहेते छबि रंग चरन की, अजूं लगत न हैड़े भाल ॥१३७॥

दिल चाही खूबी सलूकी, दिल चाही नरम छब ।
दिल चाह्या रंग खुसबोए, रही दिल चाही अंग फब ॥१३८॥

यों दिल चाहे वस्तर, और दिल चाहे भूखन ।
जब जिन अंग दिल जो चाहे, सो आगूंहीं बन्यो रोसन ॥१३९॥

जिन अंग जैसा भूखन, दिल चाह्या सब होत ।
खिन में दिल और चाहत, आगूं तैसी करे जोत ॥१४०॥

खिन में सिनगार बदले, बिना उतारे बदलत ।
रंग तित भूखन नए नए, रंग जो दिल चाहत ॥१४१॥

दिल चाही सोभा धरे, दिल चाही खुसबोए ।
दिल चाही करे नरमाई, जोत करे जैसी दिल होए ॥१४२॥

रूहें बसत इन कदमों तले, जासों पाइए पेहेचान ।
सब रूहें नूर इन अंग को, ए नूर अंग रेहेमान ॥१४३॥

ए जो अरवाहें अर्स की, पड़ी रहें तले कदम ।
खान पान इनों इतहीं, रूहें रहें तले कदम ॥१४४॥

याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल ।
हक अर्स मोमिन दिल, तिन निमख न पड़े भूल ॥१४५॥

१. रेखा । २. आहार ।

हक कदम हक अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल ।
छूटे ना अर्स कदम, जो याही की होए मिसल ॥१४६॥

ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े ।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए ॥१४७॥

भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन ।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन ॥१४८॥

महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन ।
या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन ॥१४९॥

।।प्रकरण।।९।।चौपाई।।७९९।।

श्री राजजी का सिनगार तीसरा

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित ।
मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत ।।१।।

चाहिए निसदिन हक अर्स में, और इत हक खिलवत ।
होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अर्स न्यामत ।।२।।

बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर ।
एही अर्स दिल रूह के, बैठे सिनगार कर ।।३।।

अब निस दिन रूह को चाहिए, फेर सब अंग देखे नजर ।
सूरत छबि सलूकी, देखों भूखन अंग वस्तर ।।४।।

सिनगार किया सब दुलहे, वस्तर या भूखन ।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन ।।५।।

सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार ।
काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊं बलिहार ।।६।।

रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन ।
देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए वस्तर भूखन ।।७।।

कलंगी दुगदुगी पगड़ी, देख नीके फेर कर ।
बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर ।।८।।

पेहेले देख पाग सलूकी, माहें कई बिध फूल कटाव ।
जोत करी है किन बिध, जानों के नकस नंग जड़ाव ।।९।।

देख कलंगी जोत सलूकी, जेता अर्स अवकास ।
सो सारा ही तेज में, पूरन भया प्रकास ॥१०॥

और खूबी इन कलंगी, और दुगदुगी सलूक ।
और पाग छबि रूह देख के, होए जात नहीं भूक भूक ॥११॥

देख सुन्दर सरूप धनीय को, ले हिरदे कर हेत ।
देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोको देत ॥१२॥

नैन रसीले रंग भरे, भौं भृकुटी बंकी अति जोर ।
भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खैंच मरोर ॥१३॥

हँसत सोभित हरवटी, अंग भूखन कई विवेक ।
मुख बीड़ी सोभित पान की, क्यों बरनों रसना एक ॥१४॥

लाल रंग मुख अधुर, तंबोल अति सोभाए ।
ए लालक हक के मुख की, मेरे मुख कही न जाए ॥१५॥

गौर मुख अति उज्जल, और जोत अतंत ।
ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत ॥१६॥

अति उज्जल मुख निलवट, सुन्दर तिलक दिए ।
अति सोभित है नासिका, सब अंग प्रेम पिए ॥१७॥

निलवट चौक चारों तरफों, रंग सोभित जोत अपार ।
निरख निरख नेत्र रूह के, सब अंग होए करार ॥१८॥

देख निलवट तिलक, मुख भौं भासत अति सुन्दर ।
सब अंग दृढ़ करके, ले रूह के नैनों अन्दर ॥१९॥

नैन निलवट बंकी छबि, अति चंचल तेज तारे ।
रंग भीने अति रस भरे, बका निसबत रूह प्यारे ॥२०॥

ए रस भरे नैन मासूक के, आसिक छोड़े क्यों कर ।
कई कोट गुन कटाख्य में, रूह छोड़ी न जाए नजर ॥२१॥

जो देवें पल आड़ी मासूक, तो जानों बीच पड़्यो ब्रह्मांड ।
रूह अन्तराए सहे ना सरूप की, ए जो दुलहा अर्स अखंड ॥२२॥

नैन सुख देत जो अलेखे, मीठे मासूक के प्यारे ।
मेहेर भरे सुख सागर, रूह तर न सके तारे ॥२३॥

मीठे लगें मरोरते, मीठी पांपण लेत चपल ।
फिरत अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल ॥२४॥

बीड़ी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी ।
लेत अंगुरियां छबिसों, बलि जाऊं सबे अंगुरी ॥२५॥

बीड़ी मुख आरोगते, अधुर देखत अति लाल ।
हँसत हरवटी सोभा सुन्दर, नेत्र मुख मछराल[1] ॥२६॥

अधबीच आरोगते, वचन केहेत रसाल ।
नैन बान चलावत सेहेजे, छाती छेद निकसत भाल ॥२७॥

मोरत पान रंग तंबोल, मानों झलके माहें गाल ।
जो नैनों भर देखिए, रूह तबहीं बदले हाल ॥२८॥

मरकलड़े[2] मुख बोलत, गौर हरवटी हँसत ।
नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत ॥२९॥

जोत धरत चित्त चाहती, चित्त चाही नरम लगत ।
कई रंग करें चित्त चाहती, खुसबोए करत अतंत ॥३०॥

चित्त चाहे सुख देत हैं, लाल मोती कानन ।
देख देख जाऊं वारने, ए जो भूखन चेतन ॥३१॥

१. मस्ती से भरे । २. मुस्कुराते हुए ।

सुपन सरूप जिन बिध के, पेहेनत हैं भूखन ।
सो तो अर्स में है नहीं, जो सिनगार करें बिध इन ॥३२॥

नए सिनगार जो कीजिए, उतारिए पुरातन ।
नया पुराना पेहेन उतारना, ए होत सुपन के तन ॥३३॥

ए बारीक बातें अर्स की, सो जानें अरवा अरसै के ।
नया पुराना घट बढ़, सो कबूं न अर्स में ए ॥३४॥

अर्स में सदा एक रस, करें पल में कोट सिनगार ।
चित्त चाहे अंगों सब देखत, नया पेहेन्या न जूना उतार ॥३५॥

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, करें कोट रंग चित्त चाहे ।
अर्स जूना न कबूं कोई रंग, देखत पल में नित नए ॥३६॥

देत खुसबोए खुसाली, श्रवनों अति सुन्दर ।
बात सुनत मेरी रीझत, सुख पावत रूह अन्दर ॥३७॥

जो अटकों इन अंग में, तो जाए न सकों छोड़ कित ।
गुझ गुन कई श्रवन के, रूह इतहीं होवे गलित ॥३८॥

जामा अंग जवेर का, भूखन नंग कई रंग ।
जोत पोहोंचे आकास में, जाए करत मिनो मिने जंग ॥३९॥

याही विध जामा पटुका, याही विध पाग वस्तर ।
करें चित्त चाहे अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर ॥४०॥

जामा पटुका चोली बांहें की, चीन मोहोरी बन्ध बगल ।
ए आसिक अंग देख के, आगूं नजर न सके चल ॥४१॥

चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत ।
तले हार बीच दुगदुगी, नेहेरे लेहेरें जोत चलत ॥४२॥

बगलों बेली फूल खभे, गिरवान बेली जर ।
पीछे कटाव जो कोतकी, रूह छोड़ न सके क्योंए कर ॥४३॥

कहें हार हम हैड़े पर, अति बिराजे अंग लाग ।
सुख देत हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग ॥४४॥

कण्ठ हार नंग सब चेतन, देख सोभा सब चढ़ती देत ।
ए सुख रूह सो जानहीं, जो सामी हक इसारत लेत ॥४५॥

ए जंग रूह देख्या चाहे, मिल जोतें जोत लरत ।
कई नंग रंग अवकास में, मिनों मिने जंग करत ॥४६॥

जोत अति जवेरन की, बांहों पर बाजू बन्ध ।
जात चली जोत चीर के, कई विध ऐसी सनन्ध ॥४७॥

हाथ काड़ों कड़ी पोहोंचियां, जानों ए जोत इनथें अतन्त ।
जोत सागर आकास में, कोई सके ना इत अटकत ॥४८॥

बाजु बन्ध पोहोंची कड़ी, ए भूखन सोभा अपार ।
नरम हाथ लीकें हथेलियां, क्यों आवे सोभा सुमार ॥४९॥

जुदे जुदे रंगों जोत चले, ए जो नंग हाथ मुंदरी ।
ए तेज लेहेरें कई उठत हैं, ज्यों ज्यों चलवन करें अंगुरी ॥५०॥

क्यों कहूं जोत नखन की, ए सबथें अति जोर ।
जानों तेज सागर अवकास में, सबको निकसे फोर ॥५१॥

रंग देखूं के सलूकी, छबि देखूं के नरम उज्जल ।
जो होए कछुए इस्क, तो इतथें न निकसे दिल ॥५२॥

कैसी नरम अंगुरियां पतली, देख सलूकी तेज ।
आसमान रोसनी पोहोंचाए के, मानों सूर जिमी भरी रेजा रेज ॥५३॥

जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाए ।
जो रूह नैनों में न समावहीं, सो जुबां कह्यो क्यों जाए ॥५४॥

यों वस्तर भूखन अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब ।
केहे सब का लेऊं पड़-उत्तर, ए नहीं रूह मिने ख्वाब ॥५५॥

रद बदल भूखन सों, और करे वस्तरों सों ।
और अंग लग जाए ना सके, फारग[1] न होए इनमों ॥५६॥

ए वस्तर भूखन हक के, सो सारे ही चेतन ।
सब जवाब लिया चाहिए, आसिक एही लछन ॥५७॥

आसिक रूह जित अटकी, अंग भूखन या वस्तर ।
यासों लगी गुफ्तगोए[2] में, सो छूटे नहीं क्योंए कर ॥५८॥

इस्क बसे सब अंग में, सब बिध देत हैं सुख ।
कई सुख हर एक अंग में, सो कह्यो न जाए या मुख ॥५९॥

प्रेम लिए सोभा गुन, सब सुख देत पूरन ।
या वस्तर या भूखन, सुख जाहेर या बातन ॥६०॥

सुख इस्क हक जात के, तिनसे अंग सुखदाए ।
बाहेर सुख सब अंग में, ए सुख जुबां कह्यो न जाए ॥६१॥

अंग वस्तर या भूखन, सब सुख दिया चाहे ।
कई सुख जाहेर कई बातन, सब मिल प्रेम पिलाए ॥६२॥

इस्क देवें लेवें इस्क, और ऊपर देखावें इस्क ।
अर्स इस्क जरे जरा, ए जो सूरत इस्क अंग हक ॥६३॥

एक अंग जिन देख्या होए, सो पल रहे न देखे बिगर ।
हुई बेसकी इन सरूप की, रूह अंग न्यारी रहे क्यों कर ॥६४॥

सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत ।
हाए हाए रूह रेहेत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत ॥६५॥

चारों जोड़े चरन के, ए जो अर्स भूखन ।
ए लिए हिरदे मिने, आवत सरूप पूरन ॥६६॥

जो सोभावत इन चरन को, ए भूखन सब चेतन ।
अनेक गुन याके जाहेर, और अलेखे बातन ॥६७॥

१. निवृत्त । २. बात-चीत (वार्तालाप) ।

नंग नरम जोत अतंत, और अतंत खुसबोए ।
ए भूखन चरनों सोभित, बानी चित्त चाही बोलत सोए ॥६८॥

गौर चरन अति सोभित, और सिनगार भूखन सोभित ।
ए अंग संग न्यारे न कबहूं, अति बारीक समझन इत ॥६९॥

एही ठौर आसिकन की, अर्स की जो अरवाहें ।
सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहें तले पाए ॥७०॥

अर्स रूहें आसिक इनकी, जिन पायो पूरन दाव ।
ठौर ना और रूहन को, जाको लगे कलेजे घाव ॥७१॥

कई रंग नंग वस्तर भूखन, चढ़ी आकास जोत लेहेर ।
जो जोत नख चरन की, मानों चीर निकसी नेहेर ॥७२॥

केहेती हों इन जुबांन सों, और सुपन श्रवन नजर ।
जो नजरों सूरज ख्वाब के, सो सिफत पोहोंचे क्यों कर ॥७३॥

कट चीन झलके दावन, बैठ गई अंग पर ।
कई रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर ॥७४॥

और भूखन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत ।
नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उद्दोत ॥७५॥

पांउं तली नरम उज्जल, लीकें एड़ी लांक लाल ।
ए रूह आसिक से क्यों छूटहीं, ए कदम नूर जमाल ॥७६॥

तली हथेली हाथ पांऊं की, लाल अति उज्जल ।
और बीसों अंगुरियां नरम पतली, नख नरम निरमल ॥७७॥

काड़े कोमल हाथ पांउं के, फने पीड़ी अंग माफक ।
उज्जल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक ॥७८॥

रंग रस इंद्री नौतन, चढ़ता अंग नौतन ।
तेज जोत सोभा नौतन, नौतन चढ़ता जोवन ॥७९॥

छब फब मुख सनकूल, चढ़ती कला देखाए ।
कायम अंग अर्स के, सब चढ़ता नजरों आए ॥८०॥

ए अंग सब अर्स के, अर्स वस्तर भूखन ।
अर्स जरे जवेर को, सिफत न पोहोंचे सुकन ॥८१॥

सब अंग इस्क के, गुन अंग इन्द्री इस्क ।
सब्द न पोहोंचे सिफत, इन बिध सूरत हक ॥८२॥

केहे केहे दिल जो केहेत है, ताथें अधिक अधिक अधिक ।
सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक ॥८३॥

अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए ।
पैदास भूखन इन विध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे ॥८४॥

एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ़ होए ।
सो तो अर्स में हैं नहीं, वाहेदत में नहीं दोए ॥८५॥

घड़े जड़े ना समारे, ना सांध मिलाई किन ।
दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन ॥८६॥

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत ।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत ॥८७॥

जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत ।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत ॥८८॥

॥प्रकरण॥१०॥चौपाई॥८८७॥

श्री सुन्दर साथ को सिनगार

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल ।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल ॥१॥

जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार ।
सागर भर्‌या सब एक रस, माहें कई बिध तरंग अपार ॥२॥

निलवट बेना[1] चांदलो, हरी गरदन मुख मोर ।
नैन चोंच सिर सोभित, बीच बने तरफ दोऊ जोर ।।३।।

निरमल मोती नासिका, कई बिध नथ बेसर ।
जोत जोर नंग मिहीं नकस, ए बरनन होए क्यों कर ।।४।।

सोभित हैं सबन के, कानन झलकत झाल[2] ।
माहें मोती नंग निरमल, झांई उठत माहें गाल ।।५।।

चार चार हार सबन के, उर पर अति झलकत ।
कण्ठ सरी कण्ठन में, सबन के सोभित ।।६।।

एक हार हीरन का, दूजा हेम कंचन ।
तीजो हार मानिक को, चौथा हार मोतियन ।।७।।

कहूं डोरे कहूं बादले, कहूं खजूरे हार ।
कहा कहूं जवेर अर्स के, झलकारों झलकार ।।८।।

हाथ चूड़ी नंग नवघरी, अंगूठिएं झलकत नंग ।
उज्जल हाथ हथेलियां, पोहोंचों पोहोंची नंग कई रंग ।।९।।

जैसे सरूप अर्स के, भूखन तिन माफक ।
याही रवेस[3] वस्तर जवेर के, ए अंग बड़ी रूह हक ।।१०।।

जैसी सोभा भूखन की, कहूं तैसी सोभा वस्तर ।
कछू पाइए सोभा सरूप की, जो खोले रूह नजर ।।११।।

वस्तरों के नंग क्यों कहूं, कई जवेरों जोत ।
सबे भई एक रोसनी, जानों गंज अंबार उद्दोत ।।१२।।

अतन्त नंग अर्स के, और नरम जवेर अतन्त ।
अतन्त अर्स रसायन, खूबी खुसबोए अति बेहेकत ।।१३।।

कहूं केते नाम जवेरन के, रसायन नाम अनेक ।
कई नाम भूखन एक अंग, सो कहां लग कहूं विवेक ।।१४।।

१. माथे पर बेंदी के बीच पहनने का एक भूषण । २. कान का भूषण, बालियां । ३. माफक ।

सूरत सकल साथ की, मुख कोमल सुन्दर गौर ।
ए छबि हिरदे तो फबे, जो होवे अर्स सहूर ॥१५॥

रूहें सुन्दर सनकूल[1] मुख, नहीं सोभा को पार ।
घट बढ़ कोई न इनमें, एक रस सब नार ॥१६॥

कई रंग सोभित साड़ियां, रंग रंग में कई नंग सार ।
भिन्न भिन्न झलके एक जोत, कई किरनें उठें बेसुमार ॥१७॥

हर एक के सिनगार, तिन सिनगार सिनगार कई नंग ।
नंग नंग में कई रंग हैं, तिन रंग रंग कई तरंग ॥१८॥

तरंग तरंग कई किरनें, कई रंग नंग किरनें न समाए ।
यों जोत सागर सरूपों को, रह्यो तेज पुन्ज जमाए ॥१९॥

अब इनके अंग की क्यों कहूं, ठौर नहीं बोलन ।
क्यों कहूं सोभा अखण्ड की, बीच बैठ के अंग सुपन ॥२०॥

रंग तरंग किरने कही, कही तेज जोत जुबां इन ।
प्रकास उद्दोत सब सब्द में, जो कह्या नूर रोसन ॥२१॥

ज्यों ज्यों बैठियां लग लग, त्यों त्यों अरस-परस सुख देत ।
बीच कछू ना रेहे सके, यों खैंच खैंच ढिग लेत ॥२२॥

जानों सागर सब एक जोत में, नूर रोसन भर पूरन ।
झांई झलके तेज दरियाव ज्यों, कई उठे तरंग भिन्न भिन्न[2] ॥२३॥

ऊपर तले की रोसनी, और वस्तर भूखन की जोत ।
और जोत सरूपों की क्यों कहूं, ए जो ठौर ठौर उद्दोत[3] ॥२४॥

ऊपर तले थम्भ दिवालों, सब जोत रही भराए ।
बीच समूह जोत साथ की, बनी जुगल जोत बीच ताए ॥२५॥

ए जोत में सोभा सुन्दर, और सरूपों की सुखदाए ।
देख देख के देखिए, ज्यों नख सिख रहे भराए ॥२६॥

१. प्रसन्न । २. अलग - अलग । ३. प्रकास ।

ज्यों दरिया तेज जोत का, त्यों सब दिल दरिया एक ।
एक रस एक रोसनी, जुबां क्यों कर कहे विवेक ॥२७॥

जोत उपली कही जुबांन सों, पर रेहेस चरित्र सुख चैन ।
सुख परआतम तब पाइए, जब खुलें अन्तर के नैन ॥२८॥

एक रस होइए इस्क सों, चलें प्रेम रस पूर ।
फेर फेर प्याले लेत हैं, स्याम स्यामाजी हजूर ॥२९॥

क्यों कहूं सुख सबन के, सब अंगों के एक चित्त ।
अरस-परस सुख लेवहीं, अंग नए नए उपजत ॥३०॥

साथ समूह की क्यों कहूं, जाको इस्कै में आराम ।
अरस-परस सब एक रस, पिउ विलसत प्रेम काम ॥३१॥

इन धाम के जो धनी, तिन अंगों का सनेह ।
हेत चित्त आनन्द इनका, क्यों कहूं जुबां इन देह ॥३२॥

सुख अन्तर अन्तस्करन के, आवें नहीं जुबांन ।
प्रेम प्रीत रीत अन्तर की, सो क्यों कर होए बयान ॥३३॥

सत सरूप जो धाम के, तिनके अन्तस्करन ।
इस्क तिनके अंग का, सो कछुक करूं बरनन ॥३४॥

नख सिख अंग इस्क के, इस्कै संधों संध ।
रोम रोम सब इस्क, क्यों कर कहूं सनंध ॥३५॥

अन्तस्करन इस्क के, इस्कै चित्त चितवन ।
बातां करें इस्क की, कछू देखें ना इस्क बिन ॥३६॥

तत्व गुन अंग इंद्रियां, सब इस्कै के भीगल ।
पख सारे इस्क के, सब इस्क रहे हिल मिल ॥३७॥

ए सुख संग सरूप के, जो अन्तर अंदर इस्क ।
आतम अन्तस्करन विचारिए, तो कछू बोए आवे रंचक ॥३८॥

जो कोई आतम धाम की, इत हुई होए जाग्रत ।
अंग आया होए इस्क, तो कछू बोए आवे इत ॥३९॥

पिउ नेत्रों नेत्र मिलाइए, ज्यों उपजे आनन्द अति घन ।
तो प्रेम रसायन पीजिए, जो आतम थें उतपन ॥४०॥

आतम अन्तस्करन विचारिए, अपने अनुभव का जो सुख ।
बढ़त बढ़त प्रेम आवहीं, परआतम सनमुख ॥४१॥

इतथें नजर न फेरिए, पलक न दीजे नैन ।
नीके सरूप जो निरखिए, ज्यों आतम होए सुख चैन ॥४२॥

तब प्रेम जो उपजे, रस परआतम पोहोंचाए ।
तब नैन की सैन कछू होवहीं, अन्तर आंखां खुल जाए ॥४३॥

अन्तस्करन आतम के, जब ए रह्यो समाए ।
तब आतम परआतम के, रहे न कछू अन्तराए ॥४४॥

परआतम के अन्तस्करन, पेहेले उपजत है जे ।
पीछे इन आतम के, आवत है सुख ए ॥४५॥

ताथें हिरदे आतम के लीजिए, बीच साथ सरूप जुगल ।
सुरत न दीजे टूटने, फेर फेर जाइए बल बल ॥४६॥

सोभा मुखारबिन्द की, क्यों कर कहूं तेज जोत ।
रस भर्यो रसीलो दुलहा, जामें नित नई कला उद्दोत ॥४७॥

कमी जो कछुए होवहीं, तो कहिए कला अधिकाए ।
ए तो बढ़े तरंग रंग रस के, यों प्रेमे देत देखाए ॥४८॥

बल बल सोभा सरूप की, बल बल वस्तर भूखन ।
बल बल मीठी मुसकनी, बल बल जाऊं खिन खिन ॥४९॥

बल बल बंकी पाग के, बल बल बंके नैन ।
बल बल बंके मरोरत, बल बल चातुरी चैन ॥५०॥

बल बल तिरछी चितवनी, बल बल तिरछी चाल ।
बल बल तिरछे वचन के, जिन किया मेरा तिरछा हाल ॥५१॥

बल बल छबीली छब पर, दंत तंबोल मुख लाल ।
बल बल आठों जाम की, बल बल रंग रसाल ॥५२॥

बल बल मीठे मुख के, अंग अंग अमी रस लेत ।
कई बिध के सुख देत हैं, पल पल में कर हेत ॥५३॥

बल बल जाऊं चरन के, बल बल हस्त कमल ।
बल बल नख सिख सब अंगों, बल बल जाऊं पल पल ॥५४॥

बल बल पियाजी के प्रेम पर, बल बल चितवन हेत ।
महामत बल बल सबों अंगों, फेर फेर वारने लेत ॥५५॥

॥प्रकरण॥११॥चौपाई॥९४२॥

सागर पांचमा इस्क का

पांचमा सागर पूरन, गेहेरा गुझ गंभीर ।
प्याले इस्क दरियाव के, पीवें अर्स रूहें फकीर ॥१॥

इन रस को ए सागर, पूरन जुगल किसोर ।
ए दरिया सुख पांचमा, लेहेरी आवत अति जोर ॥२॥

अति सुख बड़ी रूह को, इस्क तरंग अतंत ।
मुख मीठी अपनी रूह को, रस रसना पिलावत ॥३॥

हेत कर इन रूहन की, प्यार सों बात सुनत ।
सो वचन अन्दर लेय के, मुख सामी बान बोलत ॥४॥

नैनों नैन मिलाए के, अमीरस सींचत ।
अपने अंग रूहें जान के, नेह नए नए उपजावत ॥५॥

सुख केते कहूं स्यामाजीय के, हक सुख बिना हिसाब ।
ए सुख सोई जानहीं, जो पिए इन साकी सराब ॥६॥

रस भरी अति रसना, अति मीठी वल्लभ बान ।
ए सुख कह्यो न जावहीं, जो सुख देत जुबांन ।।७।।

कई सुख मीठी बान के, हक देत कर प्यार ।
ज्यों मासूक देत आसिक को, एक तन यार को यार ।।८।।

नैन रसीले रंग भरे, प्रेम प्रीत भीगल ।
देत हैं जब हेत सुख, चुभ रेहेत रूह के दिल ।।९।।

इस्क प्याला रंग रस का, जब देत नैन मरोर ।
फूल पोहोंचे तालू रूह के, कायम चढ़ाव होत जोर ।।१०।।

कई सुख अंग सरूप के, कई सुख रंग रसाल ।
कई सुख मीठी जुबांन के, कै प्याले देत रस लाल ।।११।।

कई सुख अमृत सींचत, ज्यों रोप सींचत बनमाली ।
इन बिध नैनों सींचत, रूह क्यों न लेवे गुलाली ।।१२।।

जो कछू बोले रूह मुखथें, सो नीके सुने हक कान ।
ऐसा मीठा जवाब तोहे देवहीं, कोई न सुख इन समान ।।१३।।

अरस-परस सुख देवहीं, नाहीं इन सुख को पार ।
ए रस इस्क सागर को, अर्स रूहें पीवें बारंबार ।।१४।।

ए सुख सागर पांचमा, इस्क सागर दिल हक ।
पेहेले चार देखें सागर, कोई ना हक दिल माफक ।।१५।।

हकें तोहे खेल देखाइया, बेवरा वास्ते इस्क ।
क्यों न देखो पट खोल के, नजर खोली है हक ।।१६।।

इन ठौर बैठे देखाइया, साहेबी हक बुजरक ।
पैठ हक दिल बीच में, पी प्याले इस्क ।।१७।।

तो हकें कह्या अर्स अपना, इस्क दिल मोमिन ।
सो इस्क करे जाहेर, दिल पैठ हक के तन ।।१८।।

इस्क गुझ दिल हक का, सो करे जाहेर माहें खिलवत ।
सो खिलवत ल्याए इत आसिक, करी इस्कें जाहेर न्यामत ॥१९॥

इत दुनियां चौदे तबक में, एक दम उठत है जे ।
जो हक सहूर कर देखिए, तो सब वास्ते इस्क के ॥२०॥

ए इस्क सब हक का, अर्स हादी रूहों सों ।
ए अर्स दिल जाने मोमिन, जो हक की वाहेदत मों ॥२१॥

ए किया एतेही वास्ते, तुमारे दिल उपजाया एह ।
ए खेल में देखे जुदे होए, लेने मेरा इस्क सनेह ॥२२॥

ए इस्क सागर अपार है, वार न पाइए पार ।
ए लेहेरी इस्क सागर की, हक देवें सोहागिन नार ॥२३॥

जो हक तोहे अन्तर खोलावहीं, तो आवे हक लज्जत ।
और बड़े सुख कई अर्स के, पर ए निपट बड़ी न्यामत ॥२४॥

लेहेरी इस्क सागर की, जो तूं लेवे रूह इत ।
तो तूं देखे सुख इस्क के, ए होए ना बिना निसबत ॥२५॥

और सुख इन लेहेरन को, आवत खिलवत याद ।
इन हक इस्क सागर की, कई नेहेरें सुख स्वाद ॥२६॥

यों सुख इस्क सागर को, धनी प्यारें देत रूहन ।
सो इत देखाए मेहेर कर, जो इस्कें किए रोसन ॥२७॥

जो सुख इस्क सागर को, माहें हेत प्रीत तरंग ।
ए जो अर्स अरवाहों को, आए खिलवत के रस रंग ॥२८॥

जो हक तोहे देवें हिंमत, तो रूह तूं पी सराब ।
ए कायम मस्ती अर्स की, जो साकी पिलावे आब ॥२९॥

सुख हक इस्क के, जिनको नाहीं सुमार ।
सो देखन की ठौर इत है, जो रूह सों करो विचार ॥३०॥

जेते सुख इस्क के, लेते अर्स के माहें ।
सो देखन की ठौर एह है, और ऐसा न देख्या क्यांहें ॥३१॥

कबूं अर्स में न होए जुदागी, ना जुदागी ए न्यामत ।
ए बातें दोऊ अनहोनिया, सो हक हम वास्ते करत ॥३२॥

इस्क पाइए जुदागिएं, सो तुम पाई इत ।
वतन हकीकत सब दई, ऐसा दाव न पाइए कित ॥३३॥

फेर कब जुदागी पाओगे, छोड़ के हक अर्स ।
बैठे खेल में पिओगें, हक इस्क का रस ॥३४॥

याद करो इस्क को, कायम अर्स में लेते जो सुख ।
अलेखे अनगिनती, सो देत लज्जत माहें दुख ॥३५॥

जो सहूर करो तुम दिल से, खेल में किए बेसक ।
तो फुरसत न पाओ दम की, सुख इस्क गिनती हक ॥३६॥

ए किया तुमारे वास्ते, जो धनी खोले नजर एह ।
तो कई देखो माहें बातून, हक का प्रेम सनेह ॥३७॥

ए नजर तुमें तब खुले, जो पूरन करें हक मेहेर ।
तो एक हक के इस्क बिना, और देखो सब जेहेर ॥३८॥

हकें मेहेर बिध बिध करी, पर किन किन खोली न नजर ।
सो भी वास्ते इस्क के, करसी बातें हाँसी कर ॥३९॥

खेल बनत याही बिध, एक भागे एक लरे ।
इनकी हाँसी बड़ी होएसी, जब घरों बैठ बातां करे ॥४०॥

ए खेल सोई हाँसी सोई, और सोई हक का इस्क ।
सो सब वास्ते हाँसीय के, जो इत तुमें किए बेसक ॥४१॥

जो देखे इत आंखां खोल के, तो देखे हक का इस्क अपार ।
सोई हाँसी देखे आप पर, तो क्यों कहूं औरों सुमार ॥४२॥

मैं बोहोत हाँसी देखी आप पर, अनगिनती हक इस्क ।
इलम धनी के देखाइया, मैं दोऊ देखे बेसक ॥४३॥

मोको धनिएँ देखाइया, सब इस्क चौदे तबक ।
इत जरा न बिना इस्क, अपना ऐसा देखाया हक ॥४४॥

जो जागो सो देखियो, मेरी तो निसां[1] भई ।
रूह देखे सो दिल लग न आवहीं, तो क्यों सके जुबां कही ॥४५॥

ए तो केहेती हों खेल का, और कहा कहूं अर्स की इत ।
अर्स का इस्क तो कहों, जो ठौर जरे की पाऊं कित ॥४६॥

मोमिन होए सो समझियो, ए बीतक कहे महामत ।
अब बात न रही बोलन की, कह्या चलते जान निसबत ॥४७॥

॥प्रकरण॥१२॥चौपाई॥९८९॥

सागर छठा खुदाई इलम का

सागर छठा है अति बड़ा, जो खुदाई इलम ।
जरा सक इनमें नहीं, जिनमें हक हुकम ॥१॥

जेता तले हुकम के, ए जो कादर की कुदरत ।
ए सब बेसक तोलिया, सक न पाइए कित ॥२॥

आसमान जिमी के बीच में, बेसक हुता न कोए ।
जब लग सक दुनियां मिने, तो कायम क्यों कर होए ॥३॥

अव्वल से आखिर लग, इत जरा न कहूं सक ।
रूहअल्ला के इलम से, हुए कायम चौदे तबक ॥४॥

इस्क काहूं ना हुता, तो नाम आसिक कह्या हक ।
सो बल इन कुंजीय के, पाया इस्क चौदे तबक ॥५॥

ए दुनियां पैदा किन करी, हुती न काहूं खबर ।
सो सक मेटी सबन की, इलम खुदाई आखिर ॥६॥

१. संतोष, तृप्ति ।

वेद और कतेब में, कहूं सुध न हुती मुतलक ।
खोल हकीकत मारफत, किन काढ़ी न सुभे सक ।।७।।

बड़े सात निसान आखिर के, जासों पाइए कयामत ।
खिताब हादी जाहेर कर, दई सबों को नसीहत ।।८।।

आजूज[१] माजूज[२] लेसी सबों, ऊगे सूरज मगरब ।
ईसा मारे दज्जाल को, एक दीन करसी सब ।।९।।

दाभा[३] होसी जाहेर, मेंहेंदी मोमिनों इमामत ।
उड़ावे सूर असराफील, बेसक पाया बखत ।।१०।।

काफर और मुनाफक, हँसते थे महंमद पर ।
सोई दिन अब आए मिल्या, जो महंमदें कही थी आखिर ।।११।।

बसरी मलकी और हकी, कही महंमद तीन सूरत ।
करें सिफायत[४] आखिर, खासल खास उमत ।।१२।।

करम-कांड और सरीयत, किन किन लई तरीकत ।
दुनियां चौदे तबक में, किन खोली ना हकीकत ।।१३।।

नासूत मलकूत लाए की, ना सुध थी जबरूत ।
नाम पढ़े जानत हैं, कहें बका लाहूत ।।१४।।

ए सुध न पाई काहूं ने, क्यों है कहां ठौर विध किन ।
खोज खोज चौदे तबक का, दिल हुआ न किन रोसन ।।१५।।

सो इलम खुदाई लदुन्नी, पोहोंच्या चौदे तबक ।
सो इतथें मेहेर पसरी, सबे हुए बेसक ।।१६।।

अव्वल कह्या फुरमान[५] में, इत काजी होसी हक ।
करसी कायम सबन को, ऐसी मेहेर होसी मुतलक[६] ।।१७।।

ए खेल किया किन वास्ते, और हुआ किनके हुकम ।
ए सुध काहूं ना परी, कहां अर्स बका खसम ।।१८।।

१. दिन । २. रात । ३. जानवर । ४. सिफारिश । ५. कुरान । ६. बेशक, निश्चय ।

गिरो रूहें फरिस्ते लैल[1] में, किन वास्ते आए उतर ।
कुंन केहेते खेल पैदा किया, ए किनने किन खातिर ॥१९॥

किन कौल किया बीच अर्स के, अरवाहें जो मोमिन ।
सो पढ़े वेद कतेब को, ए खोली ना हकीकत किन ॥२०॥

ए इलमें सब विध समझे, सांचा इलम जो हक ।
सब मर मर जाते हुते, किए इलमें बका मुतलक ॥२१॥

क्यों सदर-तुल-मुन्तहा, क्यों है अर्स अजीम ।
क्यों कौल फैल हकके, क्यों हक सूरत हलीम[2] ॥२२॥

क्यों अर्स आगूं जोए[3] है, क्यों अर्स ढ़िग है ताल ।
क्यों पसु पंखी अर्स के, क्यों बाग लाल गुलाल ॥२३॥

क्यों खासल खास उमत, बीच नूरतजल्ला जे ।
क्यों खास उमत दूसरी, जो कही बीच नूर के ॥२४॥

ए नाम निसान सब लिखे, खुसबोए जिमी उज्जल ।
और कह्या पानी दूध सा, ताल जोए का जल ॥२५॥

जोए किनारे जरी द्योहरी, पूर जवेर दरखत ।
ए नाम निसान सबे लिखे, पर कोई पावे ना हकीकत ॥२६॥

नेक नेक निसान केहेत हों, वास्ते साहेदी महंमद ।
ए पट खुल्या नूर पार का, कहों कहां लग कहूं न हद ॥२७॥

इलम खुदाई लदुन्नी, रूह अल्ला ल्याए इत ।
उमियों[4] पट खोल बका मिने, बैठाए कर निसबत ॥२८॥

ए बल इन कुंजीय का, काहूं हुता न एते दिन ।
रूहअल्ला पैगाम उमत को, द्वार खोल्या बका वतन ॥२९॥

ए कायम अर्स अपार है, जो कहावत है वाहेदत ।
कोई पोहोंचे न अर्स रूहों बिना, जिनकी ए निसबत ॥३०॥

१. रात्री । २. प्यारी । ३. जमुना जी । ४. अनपढ़ ।

ए बल देखो कुंजीय का, जिन बेवरा किया बेसक ।
ए भी बेवरा देखाइया, जो गैब[1] खिलवत का इस्क ॥३१॥

ए बल देखो कुंजी का, जिन देखाई निसबत ।
ए जो रूहें जात हक की, जिन बेसक देखी वाहेदत[2] ॥३२॥

ए बल देखो कुंजीय का, खूब देखी हक सूरत ।
हक के दिल के भेद जो, सो इलमें देखी मारफत[3] ॥३३॥

कहा कहूं बल कुंजीय का, रूहें बड़ी रूह निसबत ।
और हक बड़ी रूह रूहन की, इन इलमें देखी खिलवत ॥३४॥

ए बल देखो कुंजीय का, नीके देख्या हक इस्क ।
जुदे बैठाए लिखी इसारतें, जासों समझे रूह बेसक ॥३५॥

ए बल देखो इन कुंजीय का, बातें छिपी हक दिल की ।
सो सब समझी जात हैं, हैं अर्स की गुझ जेती ॥३६॥

देखो बल इन कुंजीय का, ए जो लिखी रमूजें हक ।
आखिर रसूल होए आवहीं, दे इलम खोलावें बेसक ॥३७॥

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बैठाई जुदी कर ।
आप केहे संदेसे कहावहीं, आप ल्यावें जुदे नाम धर ॥३८॥

बल क्यों कहूं इन कुंजीय का, जो हक दिल गुझ इस्क ।
तिन दरियाव की नेहेरें, उतरी नासूत में बेसक ॥३९॥

बल कहा कहूं कुंजीय का, ए जो झूठा खेल रंचक ।
सो रूहों सांच कर देखाइया, बन्ध बांधे कई बुजरक ॥४०॥

ए बल देखो कुंजीय का, रूहें बीच चौदे तबक के आए ।
सो इलमें देखाया झूठ कर, बीच अर्स के बैठाए ॥४१॥

इन हक का इस्क दुनी मिने, न पाइए लदुन्नी बिन ।
बिना इस्क न इलम आवहीं, दोऊ तौले अरस परस बजन ॥४२॥

१. छिपा । २. एकता (एकत्व) । ३. आत्मज्ञान ।

ए कुंजी बल अपार है, जिनसों पाया अपार ।
लिया हक दिल गुझ इस्क, जिनको काहूं न सुमार ॥४३॥

ए इलम कुंजी अर्स की, रूह अल्ला ल्याए हकपें ।
माहें कई गुझ हक दिल की, सो सब देखी इन कुंजी सें ॥४४॥

आसमान जिमी के बीच में, बातें बिना हिसाब ।
तिनमें बातें जो हक की, सो लिखी मिने किताब ॥४५॥

या जाहेर या बातून, रमूजें या इसारत ।
सो खोल्या सब इन कुंजिएं, हकीकत या मारफत ॥४६॥

अव्वल से आखिर लग, किया कुंजिएं सब का काम ।
हैयाती चौदे तबकों, दई कायम भिस्त तमाम ॥४७॥

कहूं दुनियां चौदे तबक में, कह्या न हक का एक हरफ ।
तो हक सूरत क्यों केहेवहीं, किन पाई न बका तरफ ॥४८॥

तिन हक के दिल का गुझ जो, सो कुंजिएं खोल्या इन ।
तो बात दुनी की इत कहां रही, कुंजी ऐसी नूर रोसन ॥४९॥

सदर-तुल-मुंतहा अर्स अजीम, जबरूत या लाहूत ।
इत जरा सक कहूं ना रही, ए बल कुंजी कूवत[1] ॥५०॥

अर्स अजीम के बाग जो, हौज जोए जानवर ।
इत सक जरा न काहू में, मोहोलात या अन्दर ॥५१॥

इन अर्सों की भी क्या कहूं, इन कुंजी अतन्त बूझ ।
और बात इत कहां रही, काढ़्या हक के दिल का गुझ ॥५२॥

महामत कहे ए मोमिनों, ए ऐसी कुंजी इलम ।
ए मेहेर देखो मेहेबूब की, तुमको पढ़ाए आप खसम ॥५३॥

॥प्रकरण॥१३॥चौपाई॥१०४२॥

१. शक्ति ।

सागर सातमा निसबत का

अब कहूं दरिया सातमा, जो निसबत[1] भरपूर ।
याको वार न पार काहूं, जो नूर के नूर को नूर ।।१।।

बेसुमार ल्याए सुमार में, ए जो करत हों मजकूर[2] ।
क्यों आवे बीच हिसाब के, जो हक अंग सदा हजूर ।।२।।

खूबी क्यों कहूं निसबत की, वास्ते निसबत खुली हकीकत ।
तो पाई हक मारफत, जो थी हक निसबत ।।३।।

निसबत असल सबन की, जित निसबत तित सब ।
सब निसबत के वास्ते, इलमें जाहेर किए अब ।।४।।

निसबत हक की जात है, निसबत में इस्क ।
निसबत वास्ते इलम, इत आया बेसक ।।५।।

ए हकें किया इस्क सों, कई बंध बांधे जहूर ।
सो जानत हैं निसबती, जो खिलवत हुई मजकूर ।।६।।

हकें निसबत वास्ते, कई बंध बांधे माहें खेल ।
सब सुख देने निसबत को, तीन बेर आए माहें लैल[3] ।।७।।

अव्वल देखाया लैल में, निसबत जान इस्क ।
दूसरी बेर देखाइया, गुझ इस्क मुतलक ।।८।।

वास्ते निसबत बेर तीसरी, खेल देखाया हक ।
इलम बड़ाई इस्क, देख्या गुझ बका का बेसक ।।९।।

निसबत वास्ते इस्क, निसबत वास्ते इलम ।
खुसाली निसबत वास्ते, आखिर ल्याए खसम ।।१०।।

ए इलम अन्दर यों केहेत है, ए जो निसबत देखत दुख ।
इन दुख में बका अर्स के, हैं हक दिल के कई सुख ।।११।।

१. मूल संबंध । २. वर्णन । ३. रात्री ।

ए सुख सागर निसबत का, तिनका सुमार न आवे क्यांहें ।
सब हकें मपाए सागर, पर निसबत तौल कोई नाहें ॥१२॥

मापे गेहेरे सागर, जिनको थाह[1] न देखे कोए ।
तिन हक दिल अन्दर पैठ के, मापे इस्क सागर सोए ॥१३॥

जो हक काहूं न पाइया, ना किन सुनिया कान ।
पाया न वा के अर्स को, जो कौन ठौर मकान ॥१४॥

सब बुजरकों ढूंढ़्या, किन पाई न बका तरफ ।
दुनियां चौदे तबक में, किन कह्या न एक हरफ ॥१५॥

तिन हक दिल अन्दर पैठ के, माप्या सागर इस्क ।
इन हक के इलमें रोसनी, सब मापे सागर बेसक ॥१६॥

सो इस्क इलम सुख सागर, वास्ते आए निसबत ।
इन निसबत के तौल कोई, ल्याऊं कहां से हक न्यामत ॥१७॥

ए निसबत जो सागर, जानें निसबती मोमिन ।
कहूं थाह न गेहेरा सागर, कोई पावे न निसबत बिन ॥१८॥

तो क्यों कहूं जोड़ निसबत की, जो दीजे निसबत मान ।
निसबत हक की जात हैं, जो हक वाहेदत सुभान ॥१९॥

बोहोत लेहेरी इन सागर की, मेहेर इस्क इलम ।
सोभा तेज सुख कई बका, इन निसबत में जात खसम ॥२०॥

एह इलम ए इस्क, और निसबत कही जो ए ।
ए तीनों सिफत माहें मोमिनों, निसबत हक की जे ॥२१॥

किन पाया न इन इलम को, किन पाया ना ए इस्क ।
तो क्यों पावे ए निसबत, पेहेलें सूरत न पाई हक ॥२२॥

ए गुझ भेद हक रूहन के, हक दिल की भी और ।
ए जानें हक निसबती, जाको हक कदम तले ठौर ॥२३॥

१. गहराई ।

जब देखों हक निसबत, तब एकै हक निसबत ।
और हक का हुकम, कछू ना हुकम बिना कित ॥२४॥

जो कोई हक के हुकम का, ताए जो इलम करे बेसक ।
लेवे अपनी मेहेर में, तो नेक दीदार कबूं हक ॥२५॥

पर कबूं दीदार ना निसबत का, ना काहूं को एह न्यामत ।
ए जुबां इन निसबत की, कहा करसी सिफत ॥२६॥

ए जो सरूप निसबत के, काहूं न देवें देखाए ।
बदले आप देखावत, प्यारी निसबत रखें छिपाए ॥२७॥

निमूना इन निसबत का, कोई नाहीं इन समान ।
ज्यों निमूना दूसरा, दिया न जाए सुभान ॥२८॥

क्यों दीजे निमूना इन का, जो कही हक की जात ।
निसबत इस्क इलम, ज्यों बिरिख फल फूल पात ॥२९॥

सब लगे हैं निसबत को, इस्क इलम हुकम ।
ना तो कैसे इत जाहेर होंए, हम तुम इस्क इलम ॥३०॥

ए सब निसबत वास्ते, जो कछू सब्द उठत ।
ए जो नजरों देखत, या जो कानों सुनत ॥३१॥

ज्यों हाथ पांउं सूरत के, मुख नेत्र नासिका कान ।
त्यों सब मिल एक सूरत, यों वाहेदत अंग सुभान ॥३२॥

अब कहा कहूं निसबत की, दिया न निमूना जात ।
और सब्द ना इन ऊपर, अब कहा कहूं मुख बात ॥३३॥

सिफत अलेखे निसबत, ज्यों सिफत अलेखे हक ।
सब्दातीत न आवे सब्द में, मैं कही इन बुध माफक ॥३४॥

कहिए सारी उमर लग, तो सिफत न आवे सुमार ।
ए दरिया निसबत का, याकी लेहेरें अखंड अपार ॥३५॥

ए बात बड़ी हक निसबत, सो झूठे खेल में नाहें ।
ए बात होत बका मिने, हक खिलवत के माहें ॥३६॥

जो खेल में खबर ना हक की, तो निसबत खबर क्यों होए ।
हक आसिक निसबत मासूक, वाहेदत में ना दोए ॥३७॥

ए बात सुने जो खेल में, बड़ा अचरज होवे तिन ।
किन पाई ना तरफ हक की, ए तो हक मासूक वतन ॥३८॥

तीन सूरत महंमद की, गुझ हक का जानें सोए ।
हक जानें या निसबती, और कोई जानें जो दूसरा होए ॥३९॥

वाहेदत की ए पेहेचान, अर्स दिल कह्या मोमिन ।
मासूक कह्या महंमद को, जो अर्स में याके तन ॥४०॥

महामत कहे ए मोमिनों, ए निसबत इस्क सागर ।
ल्यो प्याले हक हुकमें, पिओ फूल भर भर ॥४१॥

॥प्रकरण॥१४॥चौपाई॥१०८३॥

सागर आठमा मेहेर का

और सागर जो मेहेर का, सो सोभा अति लेत ।
लेहेरें आवें मेहेर सागर, खूबी सुख समेत ॥१॥

हुकम मेहेर के हाथ में, जोस मेहेर के अंग ।
इस्क आवे मेहेर से, बेसक इलम तिन संग ॥२॥

पूरी मेहेर जित हक की, तित और कहा चाहियत ।
हक मेहेर तित होत है, जित असल है निसबत ॥३॥

मेहेर होत अव्वल से, इतहीं होत हुकम ।
जलूस साथ सब तिनके, कछू कमी न करत खसम ॥४॥

ए खेल हुआ मेहेर वास्ते, माहें खेलाए सब मेहेर ।
जाथें मेहेर जुदी हुई, तब होत सब जेहेर[1] ॥५॥

१. विष ।

दोऊ मेहेर देखत खेल में, लोक देखें ऊपर का जहूर ।
जाए अन्दर मेहेर कछू नहीं, आखिर होत हक से दूर ।।६।।

मेहेर सोई जो बातूनी, जो मेहेर बाहेर और माहें ।
आखिर लग तरफ धनी की, कमी कछुए आवत नाहें ।।७।।

मेहेर होत है जिन पर, मेहेर देखत पांचों तत्व ।
पिंड ब्रह्माण्ड सब मेहेर के, मेहेर के बीच बसत ।।८।।

दुख रूपी इन जिमी में, दुख न काहूं देखत ।
बात बड़ी है मेहेर की, जो दुख में सुख लेवत ।।९।।

सुख में तो सुख दायम, पर स्वाद न आवत ऊपर ।
दुख आए सुख आवत, सो मेहेर खोलत नजर ॥१०॥

इन दुख जिमी में बैठके, मेहेरें देखें दुख दूर ।
कायम सुख जो हक के, सो मेहेर करत हजूर ॥११॥

मैं देख्या दिल विचार के, इस्क हक का जित ।
इस्क मेहेर से आइया, अव्वल मेहेर है तित ॥१२॥

अपना इलम जिन देत हैं, सो भी मेहेर से बेसक ।
मेहेर सब बिध ल्यावत, जित हुकम जोस मेहेर हक ॥१३॥

जाको लेत हैं मेहेर में, ताए पेहेले मेहेरें बनावें वजूद ।
गुन अंग इंद्री मेहेर की, रूह मेहेर फूंकत माहें बूद[1] ॥१४॥

मेहेर सिंघासन बैठक, और मेहेर चँवर सिर छत्र ।
सोहोबत सैन्या मेहेर की, दिल चाहे मेहेर बाजंत्र ॥१५॥

बोली बोलावें मेहेर की, और मेहेरै का चलन ।
रात दिन दोऊ मेहेर में, होए मेहेरें मिलावा रूहन ॥१६॥

बंदगी जिकर मेहेर की, ए मेहेर हक हुकम ।
रूहें बैठी मेहेर छाया मिने, पिएं मेहेर रस इस्क इलम ॥१७॥

१. झूठा संसार ।

जित मेहेर तित सब है, मेहेर अव्वल लग आखिर ।
सोहोबत मेहेर देवहीं, कहूं मेहेर सिफत क्यों कर ॥१८॥

ए जो दरिया मेहेर का, बातून जाहेर देखत ।
सब सुख देखत तहां, मेहेर जित बसत ॥१९॥

बीच नाबूद दुनी के, आई मेहेर हक खिलवत ।
तिन से सब कायम हुए, मेहेरै की बरकत ॥२०॥

बरनन करूं क्यों मेहेर की, सिफत ना पोहोंचत ।
ए मेहेर हक की बातूनी, नजर माहें बसत ॥२१॥

ए मेहेर करत सब जाहेर, सब का मता तोलत ।
जो किन कानों ना सुन्या, सो मेहेर मगज खोलत ॥२२॥

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत हक के दिल ।
जाको दिल में लेत हैं, तहां आवत न्यामत सब मिल ॥२३॥

बरनन करूं क्यों मेहेर की, जो बसत है माहें हक ।
जाको निवाजें मेहेर में, ताए देत आप माफक ॥२४॥

बात बड़ी है मेहेर की, जित मेहेर तित सब ।
निमख ना छोड़ें नजर से, इन ऊपर कहा कहूं अब ॥२५॥

जहां आप तहां नजर, जहां नजर तहां मेहेर ।
मेहेर बिना और जो कछू, सो सब लगे जेहेर ॥२६॥

बात बड़ी है मेहेर की, मेहेर होए ना बिना अंकूर ।
अंकूर सोई हक निसबत, माहें बसत तजल्ला नूर ॥२७॥

ज्यों मेहेर त्यों जोस है, ज्यों जोस त्यों हुकम ।
मेहेर रेहेत नूर बल लिए, तहां हक इस्क इलम ॥२८॥

मीठा सुख मेहेर सागर, मेहेर में हक आराम ।
मेहेर इस्क हक अंग है, मेहेर इस्क प्रेम काम ॥२९॥

काम बड़े इन मेहेर के, ए मेहेर इन हक ।
मेहेर होत जिन ऊपर, ताए देत आप माफक ॥३०॥

मेहेरें खेल बनाइया, वास्ते मेहेर मोमिन ।
मेहेरें मिलावा हुआ, और मेहेर फरिस्तन ॥३१॥

मेहेरें रसूल होए आइया, मेहेरें हक लिए फुरमान ।
कुंजी ल्याए मेहेर की, करी मेहेरें हक पेहेचान ॥३२॥

दई मेहेरें कुंजी इमाम को, तीनों महंमद सूरत ।
मेहेरें दई हिकमत[१], करी मेहेरें जाहेर हकीकत[२] ॥३३॥

सो फुरमान मेहेरें खोलिया, करी जाहेर मेहेरें आखिरत ।
मेहेरें समझे मोमिन, करी मेहेरें जाहेर खिलवत ॥३४॥

ए मेहेर मोमिनों पर, एही खासल खास उमत ।
दई मेहेरें भिस्त सबन को, सो मेहेर मोमिनों बरकत ॥३५॥

मेहेरें खेल देख्या मोमिनों, मेहेरें आए तले कदम ।
मेहेरें कयामत करके, मेहेरें हँसके मिले खसम ॥३६॥

मेहेर की बातें तो कहूं, जो मेहेर को होवे पार ।
मेहेरें हक न्यामत सब मापी, मेहेरें मेहेर को नहीं सुमार ॥३७॥

जो मेहेर ठाढ़ी रहे, तो मेहेर मापी जाए ।
मेहेर पल में बढ़े कोट गुनी, सो क्यों मेहेरें मेहेर मपाए ॥३८॥

मेहेरें दिल अर्स किया, दिल मोमिन मेहेर सागर ।
हक मेहेर ले बैठे दिल में, देखो मोमिनों मेहेर कादर ॥३९॥

बात बड़ी है मेहेर की, हक के दिल का प्यार ।
सो जाने दिल हक का, या मेहेर जाने मेहेर को सुमार ॥४०॥

जो एक वचन कहूँ मेहेर का, ले मेहेर समझियो सोए ।
अपार उमर अपार जुबांए, मेहेर को हिसाब न होए ॥४१॥

१. विद्या (कला - कौशल) । २. तत्व ज्ञान ।

निपट बड़ा सागर आठमा, ए मेहेर को नीके जान ।
जो मेहेर होए तुझ ऊपर, तो मेहेर की होय पेहेचान ॥४२॥

सात सागर बरनन किए, सागर आठमा बिना हिसाब ।
ए मेहेर को पार न आवहीं, जो कई कोट करूँ किताब ॥४३॥

ए मेहेर मोमिन जानहीं, जिन ऊपर है मेहेर ।
ताको हक की मेहेर बिना, और देखें सब जेहेर ॥४४॥

महामत कहे ए मोमिनों, ए मेहेर बड़ा सागर ।
सो मेहेर हक कदमों तले, पिओ अमीरस हक नजर ॥४५॥

॥प्रकरण॥१५॥चौपाई॥११२८॥

प्रकरण तथा चौपाइयों का संपूर्ण संकलन
प्रकरण ४३९, चौपाई १४१६५

॥सागर सम्पूर्ण॥